आध्यात्मिक प्रगतिशील विचारधारा का राष्ट्रीय प्रवक्ता

हिन्दी साप्ताहिक

# दिवाकर दीप्ति

RNI.NO.38567/85

प्रधान सम्पादक: मोतीलाल बाफना
Mob. 9425103582

सह सम्पादक: निलेश बाफना

10 नवंबर 2022 गुरूवार

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरु दीक्षा जयंती

डिजिटल विशेषांक 2022

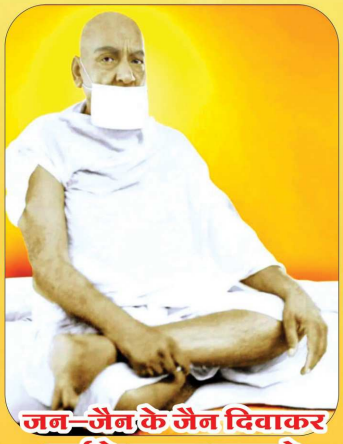

जन–जैन के जैन दिवाकर
सूर्य के समान चमकते
गुरूदेव
**श्री चौथमलजी म.सा.**

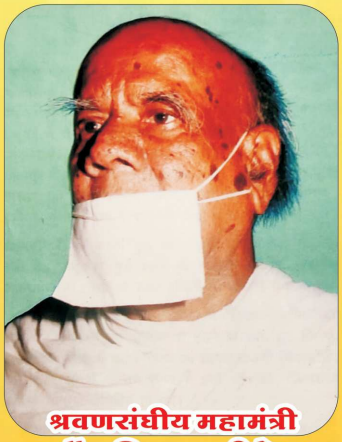

श्रवणसंघीय महामंत्री
जैन दिवाकरजी के
हनुमानजी जैसे भक्त तपस्वी
**श्री मोहनमुनिजी म.सा.**

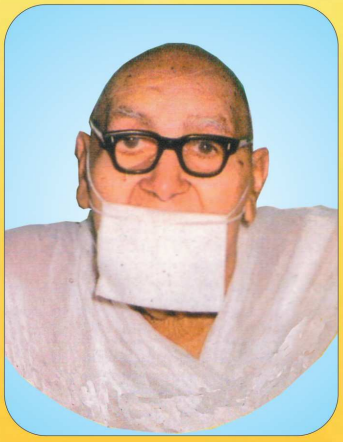

ज्योतिषाचार्य उपाध्याय
**श्री कस्तुरचंदजी म.सा.**

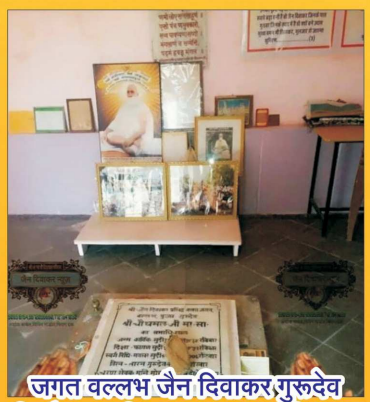

जगत वल्लभ जैन दिवाकर गुरूदेव
श्री चौथमलजी म.सा. का समाधि स्थल
बाफना की बगीची कोटा (राज.) का चित्र

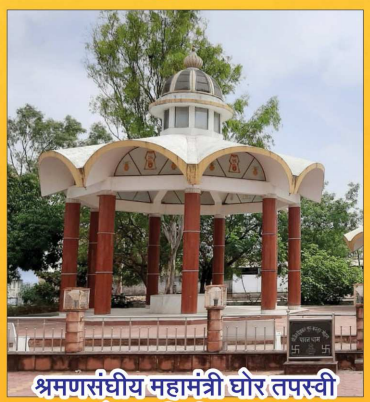

श्रमणसंघीय महामंत्री घोर तपस्वी
पू. मोहनमुनिजी म.सा. का
समाधि स्थल, रतलाम

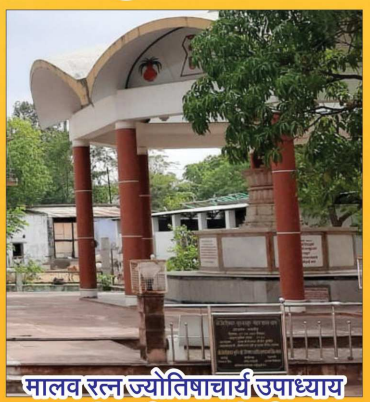

मालव रत्न ज्योतिषाचार्य उपाध्याय
जावरा नंदन श्री कस्तुरचंदजी म.सा.
समाधि स्थल रतलाम

सभी पूज्य गुरुभगंबतों के चरणों में शत्:शत्: बंदन

रतलाम की जैन दिवाकर स्मारक पर समाधि स्थल

प्राप्त जानकारी के अनुसार नीमच (म.प्र.) शहर में
स्थित जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. की जन्मस्थली

## जैन दिवाकर सुविचार....

*सत्संग करता जन्म बितायो, ज्ञानलाग्यो न अभागे रे ।*
*चौथमल कहे कालीकंबल के, रंग न दूजो लागे रे ।।*

## सम्पादकीय...

# जैन संस्कृति के मानव एवं जीव मात्र के कल्याण के प्रति जप–तप शास्त्र आदि माध्यमों से एवं ज्योतिषाचार्य पूज्य गुरूदेव ने जन–जन के कल्याण के लिए कार्य करने वाले पूज्य गुरूभगंवत को शत् शत् नमन

आज हमें अपने समय के जैन शास्त्रों एवं मानव मात्र एवं समस्त जीवों के प्रति करूमा का भाव का रखकर जैन संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति में एक दार्शनिक संत के रूप में पूज्य गुरूदेव जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. हुए । आज हम उनकी 145 वीं जन्म जयंती मनाने का हमें सौभाग्य मिल रहा है एवं इनके साथ मालवा माटी के गौरव जावरा, रतलाम (म.प्र.) के पूज्य गुरूदेव मालव रत्न ज्योति. श्री कस्तुरचंदजी म.सा. का 117 वां दीक्षा जयंती जयंती दिवस विभिन्न-विभिन्न आयोजनों तप, त्याग, गुणानुवाद, धर्म, आराधना के माध्यम से देशभर के समस्त जैन दिवाकरीय गुरूभगंवतों, गुणीमैया, महासती जी म.सा. के सानिध्य में कई दिनों तक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी श्रद्धा सुमन और मंत्र आदि अन्य जाप करते हुए गुरूदेव की अपने समय में किए गए कार्यो की अनुमोदना कर हम यह पावन दिवस जन्म जयंती एवं दीक्षा जयंती के रूप में मनाने रहे है । आज इस पुण्य प्रसंग पर दिवाकर दीप्ति समाचार पत्र परिवार की तरफ से पूज्य गुरू भगंवतों पर एवं जैन दिवाकरीय व श्रमण संघीय स्थानकवासी परंपराओं में जो हमारे गुरू भगंवत के गुरू भगंवतों को भी याद करते हुए श्रद्धासुमन के साथ मना रहे है। इस अवसर पर हमारा अभी समय के अभाव में प्रारम्भ में डिजिटल संस्करण के रूप में 6 नवंबर 2022 रविवार को कार्तिक सुदी तैरस को इसका प्रकाशित कर समाज को समर्पित करेंगे और संभावना है कि बुक की प्रिंटिंग भी करवाकर भेजी जा सकती है । इस कार्य में हमारे जैन दिवाकरीय व श्रमण संघीय परिवार के पुज्य गुरूभगंवतों, पूज्य महासतीजी म.सा. आदि हमारे संगठन के अलग-अलग क्षैत्रों से जिस-जिसका का भी मार्गदर्शन सहयोग इस कार्य हेतु हमें प्राप्त हो रहा है उन सभी का सहयोग प्राप्त करते हुए यह एक हमारे आगामी पीढ़ी के मिल का पत्थर साबित हो सकता है ऐसी हमारी आशा है ।

पूज्य गुरूदेव जैन दिवाकर जी म.सा. अपने समय में श्रमण सजैन संस्कृति के 24 तीर्थंकर महापुरूष एवं अहिंसा के अवतार 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के आर्दशों, उद्देश्यों एवं उनके द्वारा अहिंसा, शाकाहार, जीवदया, मानव एवं प्राणी मात्र की दया, भावना से जो कार्य और मार्गदर्शन देकर समाज को प्रेरित किया ऐसे कार्य को गुरूदेव ने सर्व धर्म भावना के साथ जैन समाजके प्राणी मात्र और उनकी आत्म कल्या के लिए समय-समय पर नवकार महामंत्र अन्य मंत्र, तप, आराधना और साधना कार्य के लिए आत्म कल्याण छंद, गद्य, पद्य आदि शास्त्नानुसार साहित्य की रचना कर हम सबका मार्गदर्शन साधना स्वाध्याय मार्ग हेतु आदि कार्यो के द्वारा जो समर्पित कर हम सब पर जो उपकार अपने समय में साहित्य आदि माध्यमों से सामग्री प्रकाशित कर देश के विभिन्न-विभिन्न राज्यों एवं नगरों में रंक की झोपड़ी से राजा के महल तक एवं राजमहलों, आदिवासी, पिछड़ी आदि पिछड़ी समाज के कल्याण के लिए जो कार्य उस समय में अपने मार्गदर्शन में गुरूभगंवतों के माध्यम से जन-जन में चेतना जाग्रत की है ऐसे गुरू भगंवत भक्तों के भगवान जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. का हमारे मध्यप्रदेश के नीमच में जन्म एवं आपने पूज्य कविवर हीरालाल जी म.सा. के सानिध्य में जैन स्थानकवासी परंपरा की दीक्षा ग्रहण की थी एवं आपका विक्रम संवत् 2006 का चार्तुमास रतलाम (म.प्र.) में के नीमचौक जैन स्थानक के प्रांगण में हुआ था जो कि रतलाम का ऐतिहासिक चार्तुमास था । जो हमें पढने पर हमारे स्मरण को तरोताजा कर देती है जबकि मैंने स्वयं गुरूदेव को ना तो देखा और ना ही दर्शन करने का सौभाग्य मिला । आज मन में अंतरात्मा से गुरूदेव के प्रति चेतना की झलक युवावस्था से जाग्रत हमेशा रही है ।

आज ही के दिन मालव माटी के जावरा के नंदन पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री कस्तुरचंदजी म.सा. की 117 वीं दीक्षा जयंती पर पूज्य गुरूभगंवतों के चरणों में एवं समस्त जैन दिवाकरीय गुरूभगंवतों एवं पूज्य महासती जी म.सा. के चरणों में श्रद्धासुमन एवं भक्तिभाव से दिवाकर दीप्ति का यह डिजीटल विशेषांक समर्पित कर मन हर्षित हो रहा है । इस कार्य में और विशेषांक में सामग्री उपलब्ध करवाने में इंदौर निवासी लेखक गुरूभक्त श्रावक सुरेन्द्र जी मारू एवं अन्य साथियों के अलावा पूज्य गुरूभगंवत आचार्य शिवमुनिजी म.सा., उपाचार्य महेन्द्रऋषि जी म.सा., उपाध्याय शास्त्राज्ञ पूज्य गौतममुनिजी म.सा., प्रवर्तक विजयमुनिजी म.सा., राष्ट्रसंत कमलमुनि जी कमलेश, पूज्य सभी साध्वीजी म.सा. का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन सभी गुरूभगंवतों के साथ हमें मिला। पुन- आप सभी का आभार व्यक्त करते हुए इसके प्रिंटिंग कार्य में किसी कारणवश जाने-अनजाने में भुल हो गई थी इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी है तथा विज्ञापन आदि कार्यो में सहयोग करने वाले सभी गुरूभक्तों एवं सहयोगियों का पुन- आभार ।

**सम्पादक - मोतीलाल बाफना, रतलाम**

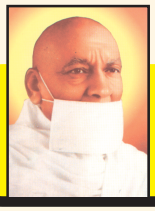

## जैन दिवाकर सुविचार....

*अन्य स्थाने कृत पांप, धर्मस्थाने विनश्यति ।*
*धर्मस्थाने कृत पापं, वज्रलेपो भविष्यति ।।*



✻ प्रधान सम्पादक ✻

**मोतीलाल बाफना**

✻ सह सम्पादक ✻

**निलेश बाफना**

✻ कार्यालय ✻

अम्बे माता मंदिर चौक

टाटा नगर बुद्धेश्वर रोड़, रतलाम

Mob. 9425103582, 9425103583

Email :

diwakardipti94@gmail.com

Web Site
www.diwakardeepti.com/

# अनुक्रमणिका

पूज्य गुरूदेव के संदेश 5–7

जन–जन के थे आप दिवाकर 8

जैन दिवाकर जी म.सा. के दीक्षा गुरु सरल..... 9

जगत वल्लभ, प्रखर वक्ता, जैन दिवाकर 10

रतलाम चार्तुमास 2006 ........ 17

मालव रत्न, उपाध्याय श्री कस्तुरचंदजी सा..... 21

श्रमण संघीय महामंत्री घोर तपस्वी............. 22

जैन दिवाकरजी म.सा. के विहार....... 23

आदर्श त्यागी एवं परम धैर्यवान आचार्य........ 27

उपाध्याय प्रवर, स्वहृदय कवि, प्रसिद्धावक्ता........... 28

मुनि कमलेश की प्रेरणा से.......... 32

जैन दिवाकर गुरूदेव चौथमलजी म.सा............... 33

कोटा (राज.) में जैन दिवाकर जी म.सा......... 35

जैन दिवाकर श्री कमलमुनि कमलेश विद्यालय........... 36

पुस्तक मूल्य : निःशुल्क

## जैन दिवाकर सुविचार....

**पापी के उपदेश न लागे, जो दुरो – दुरो भागे रे।**
**उपदेश लगा है जंबू कुंवर के, अतुल सम्पदा त्यागे रे।।**



जय सीमन्धर श्रमण संघ जयवंत हो जय महावीर

॥ जय आत्म ॥ ॥ जय आनन्द ॥ ॥ जय देवेन्द्र ॥ ॥ जय ज्ञान ॥ ॥ जय शिव ॥

आचार्य शिवमुनि जी म.सा.

# आचार्य शिवमुनि

## मंगल संदेश

**जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमलजी म.सा.** की 145वीं जन्म जयंति मनाई जा रही है। जैन दिवाकर जी महाराज ने जैन धर्म को जन-जन का धर्म बनाने के लिये प्राणिमात्र में अलख जगाई। राजाओं महाराजाओं के सान्निध्य में धर्मकथा करके उन्हें धर्माभिमुख किया। अनेक व्यक्तियों को सप्त कुव्यसन का त्याग करवाया। श्रमण संघ के निर्माण में आपकी विशेष भूमिका रही है। उनकी 145वीं जन्म जयंति पर हम श्रमणसंघ की ओर से श्रीचरणों में अपनी श्रद्धाभाव व्यक्त करते हैं।

उपाध्याय श्री कस्तुरचन्द जी म.सा. की 117वीं दीक्षा जयन्ति पर उनके दिव्य आत्मा को नमन् करते है। वे महापुरूष वर्तमान में जहां पर भी विराजमान है। उनकी कृपा दृष्टि चतुर्विध संघ पर बनी रहे। जीव धर्म की शरण में आता है तो मिथ्यात्व से सम्यक्त्व में प्रवेश करता है। सम्यक्त्व जब परिपक्व होती है तो क्षायिक सम्यक्त्व होती है। क्षायिक सम्यक्त्व वाला जीव आत्मा में ठहरकर केवलज्ञान की ओर बढ़ता है। जीव का जीव में स्थित होना ही धर्ममय होना है।

द्वय महापुरूषों के जन्म व दीक्षा जयन्ति पर दिवाकर दीप्ती का विशेषांक निकल रहा है। सम्पादक श्री मोतीलाल बाफना, श्री निलेश बाफना साधुवाद के पात्र है।

सहमंगल मैत्री,

दिनांक -: 03.11.2022

स्थान -: बलेश्वर, सूरत, गुजरात

शिवमुनि

(आचार्य शिवमुनि)

www.jainacharya.org
shivacharyaji@yahoo.co.in
09350111542
http://www.facebook.com/shivmuni
http://www.twitter.com/jainacharya
http://acharyashivmuni.blogspot.in/
http://www.youtube.com/jainacharyaji
JAINACHARYA

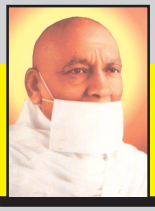

# जैन दिवाकर सुविचार....

**सर्वज्ञ के प्रत्यक्ष आत्मा, अल्पज्ञ अनुमान लगावे ।**
**बिना जीव संशय हो किसको, क्यों न ध्यान में लावे ।।**



**उपाध्याय डॉ. गौतममुनिजी (प्रथम) म.सा.**

॥ श्री महावीराय नमः ॥

जय गुरु नंद खुब दिवाकर
जय गुरु कस्तुर प्रताप हीरा

॥ श्री सुधर्मा स्वामीने नमः ॥

जय आत्म आनंद देवेन्द्र शिव

उपाध्याय
डॉ. गौतममुनि "प्रथम"

गुरु भक्त श्रीमान् मोतीलाल जी बाफना,
धर्म संदेश !

आप जन-जन वल्लभ, प्रसिद्ध वक्ता, जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी म.सा., करुणा सागर ज्योतिषाचार्य उपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तुरचंद जी म.सा. की दीक्षा जयन्ति पर "दिवाकर दिप्ती" का विशेष अंक प्रकाशित कर रहे हो, हार्दिक बधाई व शुभ कामना !

जैन दिवाकर केवल जैन समाज के ही नहीं, बल्कि विश्व के लोकप्रिय संत के रूप में प्रसिद्ध रहे। वे आदर्श त्यागी वैराग्य मय जीवन के कारण राजा-महाराजाओं में दिल के सम्राट बने, अनेको राजाओं ने प्रवचन से प्रभावित होकर अहिंसक बने, ऐसे युग-पुरुषोत्तम को भावपूर्ण अनंत वंदन है।

उपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तुरचंद जी म.सा. करुणा के देवता शांत गंभीर मुनि पुंगव थे, जिन्हों की सेवा में मुझे तीन चातुर्मास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साधर्मिक सेवा से कई अनाथो के नाथ थे, ऐसे युग पुरुष को वंदन वंदन है।

आपका परिवार जैन दिवाकर व गुरु कस्तुर के प्रति श्रद्धाशील है। आपका परिवार की सेवा भक्ति सदैव स्मृति कोष पर बनी रहती है। आपका विशेष अंक लोकप्रिय बने, यही शुभ कामना है।

गुरु प्रताप शिष्य
उपाध्याय डॉ. गौतम मुनि 'प्रथम'
वैभव मुनि

गणेश तपो धाम
खाचरोद

- श्रमण संघ जयवंत हो -

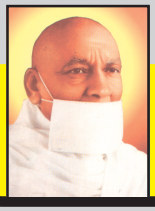

## जैन दिवाकर सुविचार....

*अरूप होने से इंद्री अगोचर वर्णादिक नहिं पावे ।*
*चौथमल कहे इंद्रभूति दीक्षित तब हो जावे ।।*

*श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य विजयमुनिजी म. सा., उदयपुर राज.)*

# दिवाकर गुरुदेव के अनन्य भक्त श्रीमान मोतीलाल बाफना

धर्म संदेश

आपके सर प्रयासों से लोकप्रिय दिवाकर दीप्ति रतलाम के द्वारा जैन दिवाकर जगत वल्लभ गुरुदेव श्री चौथमल जी महाराज 145 जन्म जयंती मालवरत्न उपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तूरचंद जी महाराज की 170 भी दीक्षा जयंती पर विशेषांक निकालने का जो भागीरथ प्रयास किया जा रहा है उसका जितना अनुमोदन किया जाए उतना कम है आप जैसे गुरु भक्तों पर हमेशा ही गौरव है यह गुरु भक्ति का गुलदस्ता संपूर्ण मानव समाज को नई दिशा प्रदान करेगा संतो एवं भक्तोंके लिए भी गुरुदेव की बारे में नई नई जानकारी मिलेगी और में भक्ति श्रद्धा और विश्वास और मजबूत होगा इसके लिए मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद प्रदान करता हूं ।

# परम गुरु भक्त शासन के सजग प्रहरी श्रीमान मोतीलाल बाफना

*श्रवणसंघीय मंत्री राष्ट-संत श्री कमलमुनि जी कमलेश मंदसौर (म.प्र.)*

जय जिनेंद्र

जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई आपके द्वारा दिवाकर दीप्ति का विशेषांक जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी महाराज की 145जन्म जयंती एवं उपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तूरचंद जी महाराज साहेब की 117 दीक्षा जयंती के उपलक्ष में अखिल भारतीय जैन दिवाकर संगठन समिति युवा शाखा की ओर से 6 नवंबर को जाते 9:30 बजे जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी महाराज साहब की भक्ति के रूप में जैन दिवाकर गुरुदेव ज्योति मान थे बड़े पुण्यवान थे जी बड़े पुण्यवान थेउनके चरणों में समर्पित करने जा रहे हैं उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली रजिस्टर्ड महिला और युवा शाखा 18 राज्यों में एक साथ एक समय भक्ति करते हुए एकता का परिचय दें मेरा सब से अनुरोध है जीवा पर गुरुदेव के नाम पर कोई भी संस्था कोई भी व्यक्ति जाति अथवा धर्म काम करें तो उत्साह पूर्वक खुला समर्थन दें और खुला समर्थन ले तभी उनके असली भक्त कहलाने का अधिकारी बनेंगे यह अनुपम गुरु भक्ति का अनुपम अवसर आया है जैन दिवाकर नहीं जन जन के दिवाकर के रूप में स्थापित करने का प्रयास हम सबको मिलकर करना है अनुरोध श्रमण संघ के साधु साध्वी श्रावकऔर श्राविकासे करता हूं संगठन समिति महिला शाखा युवा शाखा जो भी अच्छे काम करेंगे दिवाकर मंच कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे ऐसा उनको विश्वास दिलाता हूं ।

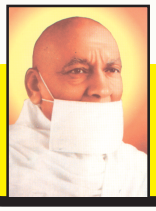

## जैन दिवाकर सुविचार....

*दृश्य - अदृश्य जो ज्ञेय पदार्थ, ज्ञाना अवश्य कहावे।*
*तन इंद्री जो भोग है वस्तु, यू भुक्ता सिद्धा हो जावे।।*



# जन जन के थे आप दिवाकर

**आनन्द सालेचा, निम्बाहेड़ा**

भारतीय परम्परा में जैन संस्कृति को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण इस संस्कृति की महानतम ऊंचाई उत्कृष्ट मेरु से भी सहस्त्रों गुणा अधिक ऊंचाई से छूने वाली है, जैन संस्कृति को इस ऊंचाई तक लाने में कई आचार्यों मुनिराजों संतो का योगदान रहा है, विश्व पटल पर ऐसे कई विशिष्ट व्यक्ति अवतरित हुए हैं जिनके अनुपम त्याग से सारा मानव जीवन उपकृत होता है, उनके व्यक्तित्व की सौरभ से क्षेत्र और काल सीमा अतीत होती है, वे अपने पुरुषार्थ और विचार से समाज मे चेतना व जागृति का नवसंचार करते है, इस वीरत्व को जागृत करती मेवाड़ मालवा की पुण्य धरा पर जन्म लेने वाले अनेक महापुरुष हुवे जिन्होंने अपनी तप साधना से स्वनाम धन्य कर स्वयं को तो आलोकित किया साथ ही साथ जन जन के अंर्तहर्दय को भी ज्योतिमर्य किया।

ऐसे ही हीरा शिष्य, संयम जीवन जादूगर, आध्यात्म कलाकार, गरीबों के मसीहा, आत्मबली, निर्भीक, साहसी, महिमा मण्डित, जैन दिवाकर पण्डित रत्न श्री चौथमल जी मसा हुवे जिन्होंने भारत भर में जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया, संसार राग से परे होकर आत्म विराग पर आगे बढ़े, राजाओं राणाओं को धर्म बोध देने वाले एकमात्र सन्त, त्याग की प्रतिमूर्ति, संघ ऐक्यता के अग्रदूत बनकर श्रमण संघ को गति दी, स्वयं दीपक की तरह प्रकाशित होकर आत्म ज्योति प्रकाश से अनगिनत आत्मदीपो को प्रकाशमान किया।

गुरुदेव के विराट व्यक्तित्व को यूं तो शब्दों में बांधना सिंधु को बिंदु में और सुमेरू को कण में समेटने समान है फिर भी उनके गुणों के गागर रूपी सागर का संक्षिप्तिकरण कर लिखने का प्रयास किया है क्योंकि ऐसे महापुरुष तो पंचाचार का सम्यक्त्व पालन कर मोक्ष मार्ग पर अपने कदम आगे बढ़ाते हुवे मानवभव को सार्थक करते हैं। कहते हैं कि एक दीपक सैंकड़ों दीपक को जलाता है और स्वयं भी प्रकाशित रहता है ऐसे ही दीपक के समान पूज्य गुरुदेव स्वयं ज्ञान गुणों से दीप्तिमय रहे और उपदेश दान से दुसरो को भी दीप्तिमान बनाया, जैन दिवाकर ऐसे ही विरले व्यक्तित्व के धनी महान योगी थे, आज वे हमारे बीच तो नही है लेकिन उनके बताए मार्ग का अनुसरण कर हम सच्चे भक्त कहला सकते हैं यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अंत मे इन शब्दों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ कि...
जिनशासन की बढ़ाई आपने शान,
हर जनमानस है आप पर कुर्बान।
आनन्द करता सदा आपके चरणों मे प्रणाम
मेरे भी पूरे हो सारे अरमान।

## परम गुरु भक्त शासन के सजग प्रहरी श्री मोतीलाल बाफना

जय जिनेंद्र

जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई आपके द्वारा दिवाकर दीप्ति का विशेषांक जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी महाराज की जन्म जयंती एवं उपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तूरचंद जी महाराज साहेब की दीक्षा जयंती के उपलक्ष में उनके चरणों में समर्पित करने जा रहे हैं यह अनुपम गुरु भक्ति का परिचय है हम जैसों को प्रेरणा मिलेगी

युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन मिलेगा गुरु भगवंत के जीवन से युवा पीढ़ी को साक्षात्कार करने का इससे बड़ा और कोई माध्यम साधन नहीं हो सकता अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते आपके प्रयासों का अभिनंदन करती हूं उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करते हो युवा के मीडिया प्रभारी निलेश जी बाफना के द्वारा इस प्रकार का संकल्प लेना अपने आप में मंच के लिए महान उपलब्धि है

कल्पना अरविंद मुथा औरंगाबाद, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष
भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली

## ऊर्जावान कर्मठ सेवाभावी श्री मोतीलाल बाफना

सादर जय जिनेंद्र

विशेष आपके सद प्रयासों से अनुपम गुरु भक्ति के रूप में दिवाकर दीप्ति पेपर का विशेषांक जन-जन के दिवाकर राजा महाराजाओं के गुरु भारत भूषण जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी महाराज की जन्म जयंती एवं उपाध्याय गुरुदेव कस्तूरचंद जी

महाराज की दीक्षा जयंती पर उनके चरणों में समर्पित करने जा रहे हैं यह अनूठा प्रयास अभी नंदनीय है इस प्रकार के कार्यों से आपने अपने आपको तो गुरु भक्ति से ओतप्रोत किया ही है हम जैसों के लिए भी अवसर प्रदान किया अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली की गरिमा में चार चांद लगाए है हार्दिक अभिनंदन एवं मंगल कामना ।

सुरेंद्र कुमार सुराणा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली
भीलवाड़ा ( राज. )

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

## गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

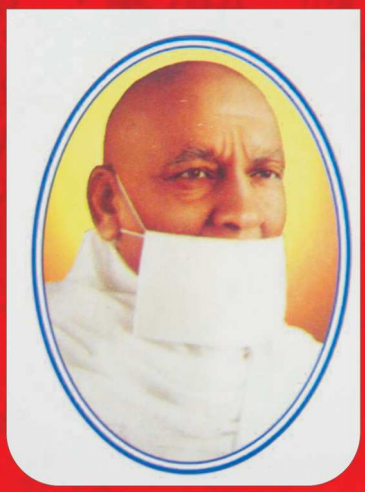

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

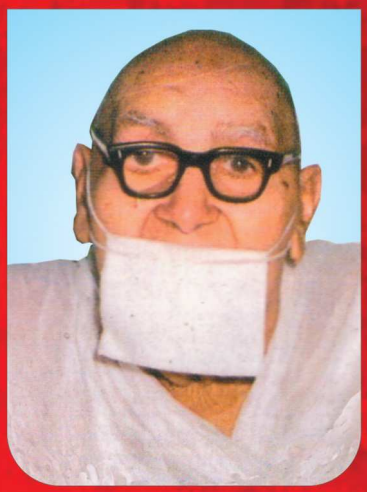

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरु दीक्षा जयंती

## पर समस्त गुरूभक्तों का

# हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

स्व. मदनलालजी
नाहर

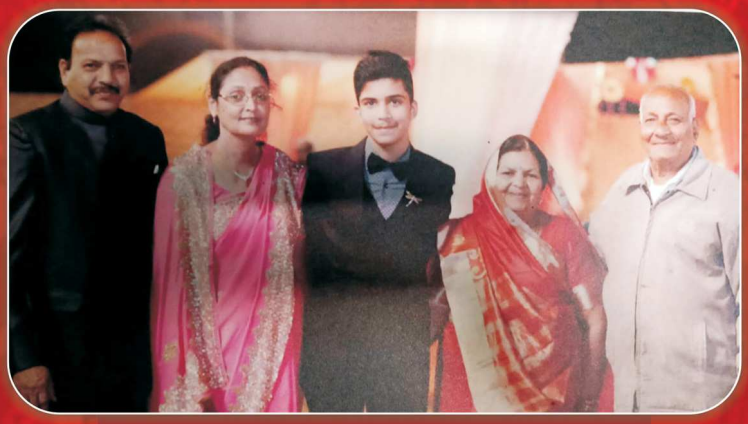

नाहर परिवार, जावरा
यार मंजिल पैलेस, जावरा जिला रतलाम

शेखर नाहर
जिलाध्यक्ष–अ.भा. जैन दिवाकर
विचार मंच, रतलाम

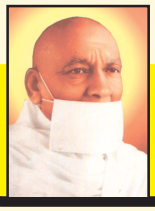

## जैन दिवाकर सुविचार....

*द्रव्य से जीव अनंत विश्व में, लोकोहार रहावे।*
*काल से नित्य अखंड अविनाशी, चेतना लक्षण पावे।*



# जैन दिवाकर जी म.सा. के दीक्षा गुरू सरल मना कविवर पूज्य श्री हीरालालजी म.सा. का संक्षिप्त जीवन वृत्त

साभार - जैन दिवाकर ज्योति पुंज खंड 1. संकलन/प्रस्तुति - सुरेन्द्र मारू, इंदौर

इतिहास साक्षी है कि मध्य प्रदेश की मालव - ही अनेक नर रत्नों की खान है, जिनकी आज भी यश - सुरभि दिग - दिगंत को सुवासित किए हैं। ऐसे महिमावंत भू - भाग में मंदसौर (प्राचीन दशपुर) जिले के कंजार्डा गांव में ओसवाल जैन भंडारी परिवार में सुश्रावक श्री रतन चंदजी की सहधर्मिणी श्रीमती राजकुंवर बाई की कुक्षि से वि. सं. 1903 में श्री जवाहरलाल, वि. सं. 1909 में श्री हीरालाल वि.सं. 1912 में श्री नंदलाल इस प्रकार तीन बालकों का जन्म हुआ।

श्री रतनचंदजी का पूरा परिवार सुसंस्कृत एवं धर्मनिष्ठ था। संतों की सत्संगति में संसार को असार जान श्री रतनचंदजी ने वि. सं. 1914 में अपने नन्हें-नन्हें तीनों प्राण - प्रिय सुपुत्रों, पत्नी तथा चल - अचल संपत्ति को तृणवत त्याग कर अपने साले केरी गांव निवासी श्री देवीलालजी के साथ हुक्मेशगच्छीय तपस्वी श्री राजमल जी के सानिध्य में भागवती दीक्षा अंगीकार कर ली। पत्नी श्रीमती राजकुंवर बाई भी इन्हीं के साथ संयम धारण करना चाहती थी, किंतु उस समय पुत्र छोटे थे और वह नहीं चाहती थी कि उन्हें दूसरों के भरोसे छोड़े।

श्री जवाहरलाल जी की उम्र जब 16 वर्ष की हुई तो सगाई की चर्चा चली, किंतु उन्होंने अपने पिताश्री की तरह ही प्रव्रज्या ग्रहण करने की बात सोचकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। परिजन चाहते थे कि

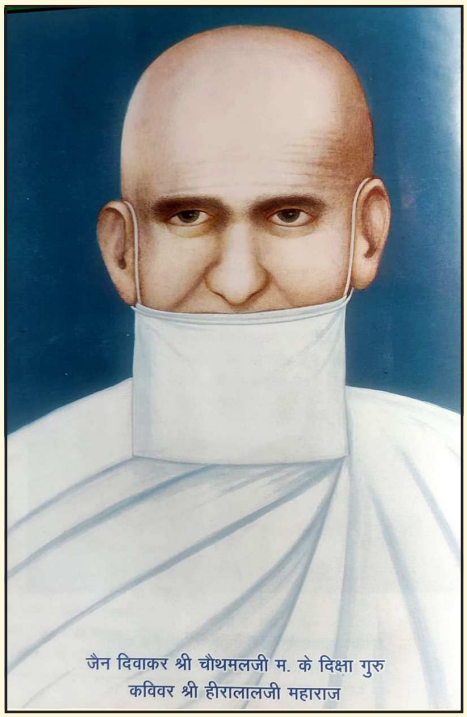

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म. के दिक्षा गुरु कविवर श्री हीरालालजी महाराज

जवाहरलाल जी गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें, पर ऐसा हो न सका।

वि. सं. 192 0 में जब आचार्य श्री शिवलाल जी म., युवाचार्य श्री चौथमलजी म. तपस्वी श्री राजमल जी म., श्री रतनचंदजी म., श्री देवीलालजी म. आदि आठ आज मुनिराज कंजार्डा पधारे, तो माता श्रीमती राजकुंवर बाई ने अपने तीनों पुत्रों को दीक्षा दिला दी। दीक्षा के समय श्री जवाहरलालजी की उम्र 17 वर्ष, श्री हीरालालजी की उम्र 12 वर्ष और श्री नंदलालजी की उम्र 7 वर्ष की थी। इसी दौरान श्रीमती राजकुंवर बाई ने भी दीक्षा अंगीकार कर ली। इस प्रकार पूरा परिवार ही दीक्षित हो गया।

श्री हीरालालजी म. बचपन से ही मिष्ठभाषी, हंसमुख, सरल स्वभाव एवं शांत प्रकृति के थे। दीक्षित होने के पश्चात उन्होंने अपने जीवन को संयम साधना के साथ ज्ञान ध्यान में लगा दिया। आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। मृदुभाषी होने से व्याख्यान असरकारी हो गए। व्यवहार इतना अच्छा था कि जो भी संपर्क में आता, वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। प्रवचनों के विषय के प्रतिपादन में ऐसे - ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करते थे कि श्रोतागण सहज ही प्रभावित हो जाते थे।

कवि हृदय होने से श्री हीरालालजी महाराज ने तत्कालीन राग- रागिनियों में कई उपदेशात्मक भजनों, स्तवन - स्तुतियों, लावणियों तथा चरित्रों के रचनाएं की, जो आज भी कई श्रद्धालुओं के कंठहार बनी हुई है। मुनिश्री द्वारा रचित एवंता मुनिवर की लावणी तो हर पर्यूषण पर्व में अधिकांश संत - सतियों द्वारा व्याख्यानों में गाई जाती है। जैन सुबोध हीरा, जैन भजन तरंगिनी, ज्ञान दर्पण * आदि रचना संग्रह मुनिश्री द्वारा विरचित है।

कविवर श्री हीरालालजी म. की संयमित वैराग्य वाहिनी- वाणी से कई आत्माऐं, अध्यात्म - साधना पथ की पथिक बनी। मुनिश्री के शिष्य परिवार में श्री शाकर चंद जी म., जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म., श्री हजारीमलजी म. (मंदसौर), श्री शोभालालजी म., (शेष पेज नं. १३ पर)

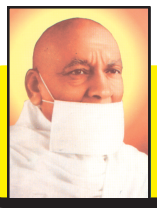

## जैन दिवाकर सुविचार....

**मान रे मानव ! मान करे मत, तम धन यौवन सब पलायरे ।**
**सूर्य की तीन अवस्था होवे, बाग में फूल कुमलाय रे ।।**



# जगत वल्लभ, प्रखर वक्ता, जैन दिवाकर पूज्य गुरूदेव श्री चौथमलजी म.सा. का जीवन परिचय

## वि.स. 1934 से वि.स. 2007 तक

संकलन/प्रस्तुति - सुरेन्द्र मारू, इंदौर मो. 98260 26001

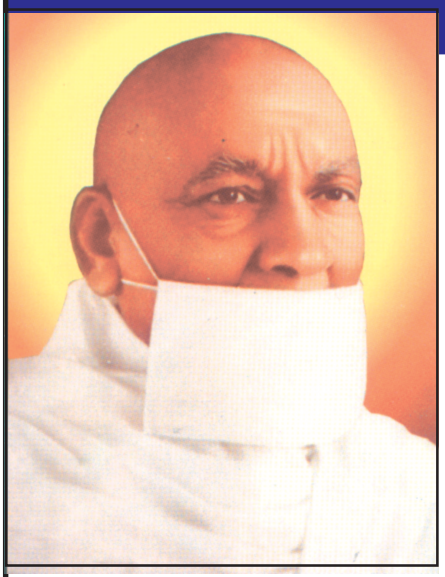

### जन्म और बचपन

योद्धाओं, धार्मिक संतों, समाज सुधारकों और अन्य नेताओं के कदमों से भारत की धरती हमेशा पवित्र रही है। मालवा का क्षेत्र विशेष रूप से बहादुर विक्रमादित्य, राजा भोज और अन्य जैसे शासकों के अलावा कई संतों के भिक्षुओं के लिए जाना जाता है। इसी पावन भूमि पर केसरबाई की कुक्षि से वि. सं. 1934 की कार्तिक शुक्ला तेरस रविवार ( ईस्वी सन 18 नवंबर 1877 ) को मध्य प्रदेश के नीमच नगर में एक पुत्र का जन्म हुआ। उनके पिता गंगारामजी एक धार्मिक, सद - व्यवहार करने वाले परिवार थे। उनके घर बहुत से साधु-संत आते रहते थे और इसलिए परिवार में धार्मिक संस्कार थे। इस बच्चे के जन्म से पूरा परिवार काफी खुश था। विद्वान ब्राह्मणों और ज्योतिषियों ने बच्चे का नाम चौथमल रखा। चौथ शब्द के चार अर्थ हैं और चार अक्षरों के इस नाम की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

( 1 ) मोक्ष-मोक्ष की लंबी राह में प्रथम तीन ज्ञान के बाद चौथा भाग शास्त्रों और चरित्र का अध्ययन तपस्या है और तप पिछले वर्षों के कर्मों के संकटों को मिटा देता है और जीवित भी रहता है।

( 2 ) पाँच प्रमुख व्रतों में, चौथा ब्रह्मचर्य है और यह आध्यात्मिक साधनाओं में परम आनंद की ओर ले जाने वाला सर्वोच्च और सबसे प्रभावी साधन है।

( 3 ) धर्म के चार खंडों में, चौथा है भाव- अर्थात भावना, प्रवृत्ति, प्रवृत्ति। यह मुख्य खंड है जिसके द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। ( 4 ) 14 गुणों में, चौथा गुण समानता है; अच्छाई ( सम्यकत्व ) मोक्ष का मार्ग सम्यक्त्व के आधार के साथ शुरू होता है। चौथा ब्रह्मचर्य है और यह आध्यात्मिक साधनाओं में परम आनंद की ओर ले जाने वाला सर्वोच्च और सबसे प्रभावी साधन है।

परिवार- चौथमलजी महाराज के दो भाई और दो बहनें थीं। बड़े भाई का नाम कालूराम और छोटे भाई का नाम फतेहचंद था। नवलबाई और सुंदरबाई दो बहनें थीं। सात साल की उम्र में चौथमलजी के पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए एक स्कूल में डाल दिया। बच्चा बहुत होशियार था और इसलिए, वह केवल पढ़ने और लिखने में ही नहीं रुका बल्कि उसने हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, अंकगणित और अन्य विषयों का भी अध्ययन किया। उन्हें नई किताबें पढ़ने का शौक था। चूंकि पूरा परिवार ईश्वरवादी था, संगीत में रुचि रखने वाले चौथमलजी ने भी स्वाभाविक रूप से अनुशासन, सच्चाई और बड़ों की सेवा के गुणों को अपनाया।

### दुनिया के साथ अलगाव की ओर झुकाव

जब चौथमलजी लगभग 13 वर्ष के थे, तब उनके बड़े भाई कालूराम ने जुआ, शराब पीने आदि के दोष विकसित किए। एक रात, कालूराम लगातार जुए में जीत रहा था और इसलिए विपरीत पक्ष के खिलाड़ियों ने उसे मार डाला। यह घटना वि. सं. 1947 - 1948 की है, से बालक चौथमलजी ने यह सीख ली कि बुरी आदतें हमेशा बुराइयों की ओर ही ले जाती हैं। कालूराम की इस असामयिक मृत्यु से चौथमलजी के पिता गंगारामजी को गहरा सदमा लगा और चौथमलजी और उनकी मां केसरबाई की दिन-रात की सेवा के बावजूद उनकी मृत्यु वि. सं. 1948 ( एक मान्यता वि.सं.1950 ) में हो गई। इन घटनाओं से मां-बेटा दोनों बहुत दुखी थे और वे इस दुनिया की बेकारता को समझने की कोशिश कर रहे थे। माँ केसरबाई बहुत दुखी थीं लेकिन उन पर चौथमलजी का पालन-पोषण करने, उन्हें किसी काम में लगाने और उनकी शादी कराने की जिम्मेदारी थी। जब चौथमलजी 16 वर्ष के थे, तब उनके रिश्तेदारों ने उनके विवाह के बारे में सोचा और उनका विवाह वि. सं. 1950 में प्रतापगढ़ ( राजस्थान ) की पूनमचंदजी की पुत्री मानकुंवरबाई से हुआ। ( शेष पेज नं. १३ पर )

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

## गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

पर समस्त गुरूभक्तों का

# हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

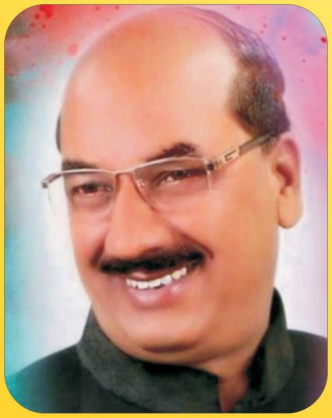

**सुशील कोचट्टा**
जावरा रतलाम (म.प्र.)
अध्यक्ष –ब्लाक कांग्रेस कमेटी जावरा
उपाध्यक्ष : नगर पालिका परिषद, जावरा
सचिव अहिंसा संघ भोपाल
संरक्षक : अ.भा. जैन दिवाकर विचार मंच, रतलाम

**हर्ष कोचट्टा**
(गोलु)

**अभय सुराणा**
जावरा रतलाम (म.प्र.)
अलंकृत : वाणी भूषण, युवा रत्न, निर्भिक श्रावक, वाणी के जादुगर
वरिष्ठ मार्गदर्शक : आल इंडिया श्वे. स्था. जैन कांफ्रेंस नई दिल्ली
रा. संगठन मंत्री अ.भा. जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली
संभागीय अध्यक्ष : आंचलिक पत्रकार संघ, भोपाल
अध्यक्ष – श्वेताम्बर वरिष्ठ सेवा समिति, जावरा

## जैन दिवाकर सुविचार....

**आगे धंधों पीछे धंधो, धंधा माही धंधों ।**
**धंधो छोड़कर भजन करें, वह साहब को बंदो ।।**



# जगत वल्लभ, प्रखर वक्ता .....

( पेज नं. ११ का शेष आलेख )

### संयम पथ की ओर

चौथमलजी हमेशा धन के साथ-साथ धार्मिक आनंद अर्जित करने की इच्छा रखते थे। उन दिनों नीमच शहर में बहुत से साधु-संत अक्सर आते रहते थे और चौथमलजी और उनकी माता केसरबाई उन्हें देखते और सेवा करते थे। एक दिन, माँ केसरबाई ने चौथमल जी के सामने दीक्षा को अपनाने की इच्छा व्यक्त की और कहा, 卐मैं अपनी आत्मा की पूर्ण भलाई प्राप्त करना चाहती हूं卐 और यह सुनकर पुत्र, चौथमलजी ने उत्तर दिया, 卐मैं आपकी इच्छा की सराहना करता हूं, लेकिन मैं भी दीक्षा को लेना चाहता हूं卐। यह कहकर चौथमल जी ने अपनी माँ से उसकी सहमति देने का अनुरोध किया, माँ ने कहा, *मेरे बेटे, तुम नवविवाहित हो और तुम्हें कुछ वर्षों के लिए अपने परिवार के साथ रहना होगा। आप दीक्षा तभी ले सकते हैं जब आपकी उचित उम्र हो।* चौथमलजी ने उत्तर दिया- *माँ, यह शरीर सांसारिक सुखों का आनंद लेने के लिए नहीं है। यह तपस्या और संयम के लिए है। मैं दीक्षा को अपनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं।* दीक्षा के लिए अपने बेटे की मजबूत भावनाओं को देखकर, मां ने उन्हें निरंतर अनुमति दी, लेकिन उन्हें अपनी पत्नी मानकुंवर की भी सहमति लेने के लिए कहा। चौथमलजी ने दीक्षा के लिए उसकी सहमति प्राप्त करने के लिए अपनी पत्नी से संपर्क किया, लेकिन वह यह कहते हुए नहीं मानी कि 卐न तो मैं दीक्षा लूंगी, न ही तुम्हें वह रास्ता अपनाने दूंगी卐। चौथमलजी के ससुर भी अपनी बेटी के लिए बहुत चिंतित थे और उन्होंने चौथमलजी को दीक्षा को न अपनाने के लिए कहा। इसके अलावा, कई अन्य रिश्तेदार भी थे। , बड़ों और दोस्तों ने चौथमलजी को दीक्षा न अपनाने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन कोई भी सफल नहीं हो सका। उन सभी का जवाब देते हुए चौथमलजी ने सरल तरीके से दीक्षा ग्रहण करना स्वीकार कर लिया और इसलिए वे वि. सं. 1952 की फाल्गुन शुक्ला तृतिया (ईस्वी सन 16 फरवरी 1896) रविवार को बोलिया ग्राम में कविवर हीरालालजी महाराज के शिष्य बन गए। चौथमलजी के दीक्षा के दो महीने बाद, उनकी माता जी केसरबाई ने भी महासती श्री फुन्दाजी की निश्रा में दीक्षा को अपनाया। इस प्रकार, बहादुर पुत्र और बहादुर माँ ने अपनी आत्मा की मुक्ति की तलाश शुरू कर दी।

### मोक्ष की तलाश में यात्रा

चौथमलजी महाराज, जिन्होंने दीक्षा को गोद लिया था, ने अपना पहला मानसून नीमच छावनी में पारित किया। इन दिनों उन्होंने यहाँ दशवैकालिक और औपपतिक के सूत्रों का अध्ययन किया। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए और भी कई शास्त्रों का अध्ययन करते रहे।

### गुरु आज्ञा का पालन

जब चौथमलजी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे थे, उनके गुरु ने आपको प्रतापगढ़ में सांसारिक जीवन की अपनी पत्नी श्रीमती मानकुंवरबाई को उपदेश देने के लिए कहा। चौथमलजी को सांसारिक सुखों से कोई लगाव नहीं था, लेकिन उन्हें अपने ससुर और अन्य लोगों द्वारा पारिवारिक भावना के कारण पारिवारिक जीवन में वापस खींचे जाने का डर था। फिर भी, उन्होंने अपने शिक्षक के निर्देशों का पालन किया और प्रतापगढ़ चले गए। उनका उपदेश व्याख्यान बाजार में तय किया गया था। उनकी सांसारिक पत्नी मानकुंवरबाई और ससुर जी को चौथमलजी के आगमन के बारे में पता चला। हालाँकि, ससुर जी उनका उपदेश सुनने नहीं आए थे लेकिन मानकुंवरबाई आ चुकी थीं। उसने चौथमलजी को पारिवारिक जीवन में वापस लाने की कोशिश की और अपने आगे के प्रयासों में वह मंदसौर, जावरा और अन्य स्थानों पर गई। उसने कम से कम एक बार चौथमलजी को मिलने के लिए जोर दिया और आश्वासन दिया कि वह वही करेगी जो उन्हें बाद में पसंद आएगा। उसकी इच्छा मान ली गई और चौथमलजी ने उसे चार-छह साध्वियों और कुछ संतों की उपस्थिति में बुलाया। उसने आकर पूछा, 卐तुमने दीक्षा का ब्रह्मचर्य और संयमित जीवन अपनाया है, अब मैं क्या करूँ ? मैं अपना जीवन कैसे व्यतीत करूँ ? किसकी शरण में जाऊँ ?卐 चौथमलजी ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, 卐आपके और मेरे बीच कई जन्मों में सांसारिक संबंध थे लेकिन हमारे बीच कोई धार्मिक -संबंध नहीं था। धर्म ही जीने का सच्चा सहारा है। यदि आप मेरी बात को स्वीकार करना चाहते हैं, तो आप धर्म का आश्रय लेवे और दीक्षा को अपनाने वाली बनें। यह आपके लिए सबसे अच्छा तरीका है卐। सच्चे संतों के वचन हमेशा बहुत प्रभावी होते हैं। मानकुंवरबाई को दीक्षा के लिए अनुरोध किया और वह वि. सं. 1967 में दीक्षा लेकर साध्वी बन गई। इस दिन को विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है। उसने छह वर्षों तक विभिन्न तपस्या की और यह देखकर कि उसका अंत बहुत निकट है, उसने संथारा अपनाया। वि. सं. 1973 में श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की दशमी को उनका देहांत हो गया।

जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज जैन धर्म के अनुयायी थे और फिर भी उन्होंने अन्य सभी संप्रदायों और धर्मों का सम्मान किया। वह प्रेम और सहानुभूति से मित्रता स्थापित करना चाहता थे। ( शेष पेज नं. १४ पर )

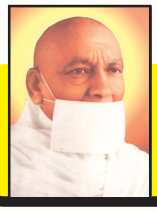

## जैन दिवाकर सुविचार....

*गुरू कीजे जान के और पानी पीजे छान के ।।*



# जगत वल्लभ, प्रखर वक्ता .....

( पेज नं. १३ का शेष आलेख )

वह दर्द सहकर भी दूसरों को खुश करना चाहता थे। वह धर्म और जीवन के सार को बहुत स्पष्ट रूप से समझते थे। वे जातिगत भेदभाव, क्षेत्रवाद और संप्रदाय-भावनाओं से ऊपर थे। उन्होंने दूसरों को धार्मिक और महान बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उनमें दूसरों के प्रति साहस और सहानुभूति थी। वह सबके प्रति अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार से बहुतों को आकर्षित कर सकते थे। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। उनकी गतिविधियां अनुकरणीय थीं।

### अहिंसा और आत्म-संयम

उन्हें सुनने के लिए हिंदू और मुसलमान समान रूप से आते थे। उसके उपदेशों को सुनकर उन्होंने अपनी बुरी आदतों को छोड़ दिया। अहिंसा के विस्तार और जीवन के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय था। भारतीय राज्यों के कई शासकों, अधिकारियों, विद्वान व्यक्तियों, करोड़पति, साहूकारों और रंक अन्य लोगों को आकर्षित किया। जैन धर्म में अहिंसा का सबसे महत्वपूर्ण विचार है और लगभग सभी धार्मिक संतों ने अहिंसा, दया, सहानुभूति और मित्रता पर जोर दिया है। जब भी कोई जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज को स्थान-स्थान पर भ्रमण के दौरान कुछ उपहार देना चाहता था, तो वे उनसे कहते थे, *त्याग करो, दया करो और उचित व्यवहार करो*। उन्होंने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और कई अन्य स्थानों का विचरण किया।और अहिंसा और जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार किया।

उनका भाषण श्रोताओं को बहुत गहराई से प्रभावित करता था। श्री जैन दिवाकर चौथमलजी के उपदेशों को सुनकर अनेक लोगों ने अपने जीवन का मार्ग बदल दिया। वे अपने कुकर्मों के लिए पश्चाताप करने लगे। शिकारियों ने अपने शिकार बाणों और धनुषों को फेंक दिया। युवक बुरी आदतों से मुक्त होकर समाज की सेवा करने लगे। नास्तिक सर्वशक्तिमान के बारे में सोचने लगे।

### एक सच्चा संत

उनका भाषण सरल लेकिन भेदी था। वह साधारण विषयों पर बोलना पसंद करते थे। दर्शक सार को बहुत आसानी से समझ सकते थे। उन्होंने वैदिक शास्त्रों, छंदों, वाक्यांशों, दृष्टांतों और कविताओं के माध्यम से बात की। उनका भाषण संगीतमय होता था और हर कोई उन्हें सुनना पसंद करता था। लोगों ने उन्हें घंटों एक टक सुनना पसंद करते थे। हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई और जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग, अमीर और गरीब, बूढ़े और जवान, पुरुष और महिलाएं, उच्च परिवार के साथ-साथ निम्न परिवार के लोग उन्हें सुनने के लिए दौड़ पड़े।

### एक सुधारवादी

उन्होंने समाज में सुधार के लिए आश्चर्यजनक कार्य किए हैं। उन्होंने बाल-विवाह और उन्नत आयु-विवाह, दहेज, मृत्युभोज, देवताओं के लिए जानवरों की बलि और अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों को रोकने का प्रयास किया। उन्होंने जेल से रिहा होने के बाद कैदियों को सज्जन बनने की सलाह दी, उन्होंने जानवरों पर क्रूरता के खिलाफ बात की। उनके उपदेशों ने समाज में व्याप्त सभी प्रकार की बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया।

### साहित्यकार

वे उच्चकोटि के धार्मिक साहित्य के बहुत अच्छे लेखक थे। उन्होंने काव्य और गद्य दोनों की रचना की। इन कविताओं को पढ़कर पाठक बहुत प्रभावित हुए।

जिस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी गीता में सभी वेदों और अन्य शास्त्रों का सार दिया है, उसी तरह श्री दिवाकर चौथमलजी महाराज ने अपनी पुस्तक निर्ग्रंथ प्रवचन में लगभग सभी जैन शास्त्रों में खोज कर भगवान महावीर के उपदेशों का पालन किया है। यह चौथमलजी महाराज द्वारा जैन समुदाय को दी गई एक अमर कृति है। यह आने वाली सदियों के लिए सभी जैनियों को प्रेरित करेगा। इसके अलावा दिवाकर दिव्य ज्योति नामक पुस्तक में उनके स्वयं के व्याख्यानों का संग्रह और प्रकाशन किया जाता है, जो 20 भागों में है।

एकता के लिए एक कदम आगे *- दीक्षा को अपनाने के बाद भी, चौथमलजी महाराज ने जैन धर्म में कई संप्रदायों को एकजुट करने की पूरी कोशिश की और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने एक मंच से दिगंबर आचार्य सुरसागरजी महाराज और श्वेतांबर मूर्ति पुजक आचार्य आनंदसागरजी महाराज के साथ कोटा वर्षावास के दौरान प्रवचन का फैसला किया। कोटा में जैन धर्म के कई संप्रदायों के बीच एकता स्थापित करने की दृष्टि से। प्रयास मुख्य रूप से सफल रहा।

जब वे सादड़ी में वर्षावास बिता रहे थे, उन्होंने जैन प्रकाश के संपादक श्री झवेरचंदभाई जाधवजी कामदार के सामने विभिन्न जैन संप्रदायों के बीच एकता लाने के लिए अपने विचार व्यक्त किए थे। उनके सुझाव संक्षेप में इस प्रकार थे–

**(i)** सभी संप्रदायों के साधु - साध्वियों को एक ही स्थान पर संयुक्त सम्मेलन करना चाहिए।

**(ii)** धार्मिक संस्कार करने के लिए केवल एक ही व्यवस्था होनी चाहिए और सभी संप्रदायों के साधु संतों और सतियों को इसका पालन करना चाहिए।

**(iii)** स्थानकवासी जैन संघों को उच्च स्तर का प्रामाणिक साहित्य प्रकाशित करना चाहिए।

( शेष पेज नं. १६ पर )

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

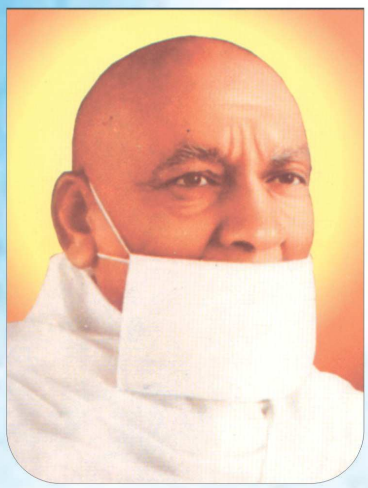
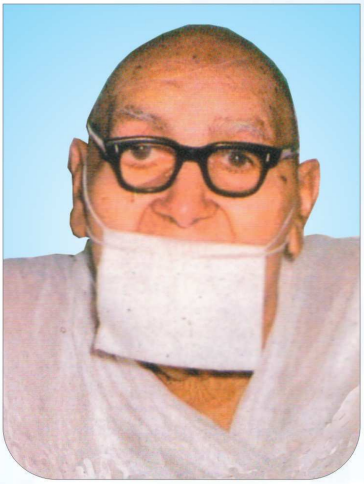

## 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

# हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

स्व. समरथमलजी कटारिया
(कलमोड़ावाला)
पूर्व संघ संरक्षक

मणीलालजी कटारिया
पूर्व संघ अध्यक्ष

अमृतलालजी कटारिया
संघ कोषाध्यक्ष
रतलाम

एवं समस्त कटारिया परिवार, भगतपुरी रतलाम

## जैन दिवाकर सुविचार....

*यो जीवन रत्न चिंतामणि सरीखो बारबार नहीं मिलसी रे*
*चेत सके तो चेत रे प्राणी यो संसार असारो ।।*



# जगत वल्लभ, प्रखर वक्ता .....

( पेज नं. १४ का शेष आलेख )

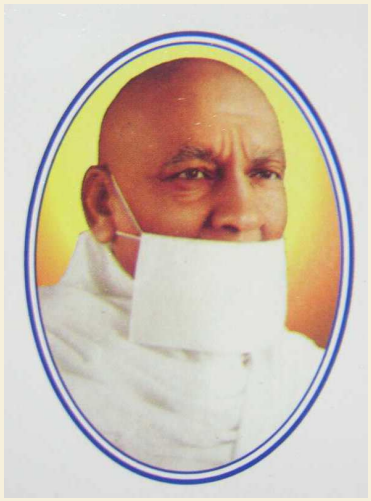

**(iv)** किसी को भी दूसरे संप्रदाय के सदस्य की टिप्पणी या आलोचना नहीं करनी चाहिए।

( 1 ) उत्सव के दिन और उत्सव के अन्य दिन सर्वसम्मति से तय किए जाते हैं।

उन्होंने भगवान महावीर के जन्मदिन को संयुक्त रूप से मनाने की सलाह दी ताकि कई संप्रदायों की एकता अच्छी तरह से स्थापित हो सके। उज्जैन, अजमेर, आगरा आदि स्थानों के दिगंबर, श्वेतांबर, स्थानकवासी और अन्य संप्रदायों के सभी जैनियों ने एक साथ मिलकर भगवान महावीर का जन्मदिन सभी खुशी और खुशी के साथ मनाया। श्री जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज के प्रयासों से ही यह संभव हो सका। यह प्रथा आज भी कई स्थानों पर जारी है। कोटा में जैन समाज की एकता की दृष्टि से यह काल अद्वितीय रहा। इस समय उनके पेट में दर्द हुआ और यह 14 दिनों तक जारी रहा।

*महाप्रयाण *- वि. सं. 2007 मृगसिर शुक्ला नवमी ( ईस्वी सन् 17 दिसंबर 1950 ) रविवार को प्रात: 8.00 बजे राजस्थान की औद्योगिक नगरी कोटा में आपका संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। आपकी आत्मा निरपेक्ष के साथ एक हो गई।

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे। वे एक प्रसिद्ध वक्ता, सुधारक, क्रांतिकारी, एकता में विश्वास रखने वाले और युग के महान व्यक्ति थे। वह हमें आने वाले युगों के लिए आकाश में सूर्य के रूप में प्रबुद्ध करता रहेगा। उनके द्वारा किए गए कार्य पूरे जैन समुदाय को प्रेरणा देते रहे हैं ,और युगों - युगों तक देते रहेंगे। आज उनके 145 वे जन्म जयंती दिवस पर उन्हे सादर वंदन, नमन, अभिनंदन। आपकी कृपा और आशीर्वाद संघ, समाज, और परिवार पर हमेशा बरसती रहे।

# जैन दिवाकर जी म.सा. के ....

( पेज नं. १० का शेष आलेख )

श्री मयाचंदजी म., श्री मूलचंदजी म. आदि मुनि सम्मिलित थे।

वि. सं. 1974 के किशनगढ़ वर्षावास में प्लेग के कारण विहार कर मुनि श्री अजमेर पधारें। वृद्धावस्था तो थी ही। आश्विन कृष्णा द्वितीय अमावस्या के दिन संध्या को मुनि श्री को ज्वर ने आ घेरा। ज्वर बढ़ता ही गया और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को समाधि पूर्वक देवलोक गमन हो गया। ऐसे महा मुनीश्वर जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता, जगद वल्लभ, भारत भूषण, शताब्दी पुरुष के गुरु श्री हीरालाल जी म. जिन्होंने तमाम विरोधों के पश्चात भी युवा चौथमल को मुनि चौथमल बनाकर तराशा, और ऐसा तराशा की जैन जगत का सितारा ही नहीं, *जैन दिवाकर* बना कर दैदीप्यमान कर जैन जगत में सदा - सदा के लिए उनको याद किया जाएगा। हीरे का साथ पाकर जैन दिवाकर जी का जीवन तो कृतार्थ हुआ ही , साथ हो लाखों जैन - जैनेतर के जीवन को संवारने का जो कार्य किया गया है, वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। मेरे गुरुदेव के गुरुदेव को सादर नमन वंदन अभिनंदन।

हम तुम्हें यूं भुला ना पाएंगे .....जब भी पायेंगे सदा.... दिल में ही पाएंगे .....

( संदर्भ- मालव मही की महामानियां में प्रकाशित श्री नरेंद्र मुनि जी म. के आलेख के आधार पर )

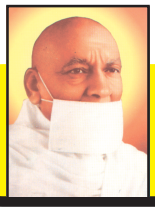

## जैन दिवाकर सुविचार....

*जिसने किया रात्री में भोजन बंद,*
*उसका छूटा चौरासी का फंदा ।।*



# रतलाम चार्तुमास 2006 संघ-संगठन की एकता महत्वपूर्ण

प्रस्तुति - मोतीलाल बाफना (पत्रकार) पूर्व राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष अ.भा. जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली मो. 9425103582

रतलाम निवासियों की उत्कृष्ट इच्छा आपका चातुर्मास रतलाम में कराने की थी, परंतु वहां ( रतलाम ) के लोग तीन संघों में विभक्त थे।( 1 ) पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के अनुयायी ( 2 ) पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के अनुयायी और ( 3 ) पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज के अनुयायी। अत: कान्फ्रेंस के प्रतिनिधि श्री खीमचंद भाई वोरा, श्री दुर्लभजी भाई खेतानी आदि ने तीनों अनुयायियों में से चुनकर एक कमेटी बनाई। इस कमेटी ने सर्वानुमति से जैन दिवाकरजी महाराज से रतलाम चातुर्मास की प्रार्थना की। विरोध में समन्वय का मार्ग प्रस्तुत किया। प्रमुख रूप से इस संप के समन्वय की कड़ी को जोड़ने में श्री नाथूलालजी सेठिया, श्री लखमीचंदजी मुणत और श्री बापूलालजी बोथरा ने अपना बहुत योगदान दिया।

श्री बापूलालजी बोथरा, श्री मांगीलालजी बोथरा, सेठ चांदमलजी चाणोदिया के अथक प्रयासों से 21 वर्षों के बाद जोधपुर में रतलाम स्पर्शने की स्वीकृति मिली थी और चैत्र कृष्णा चतुर्थी, संवत 2005 को चातुर्मास की स्वीकृति मिली।

इस स्वीकृति से रतलाम श्रीसंघ में अपार हर्ष छा गया। बाहर गांव के धर्म - प्रेमियों को भी तार और पत्रों

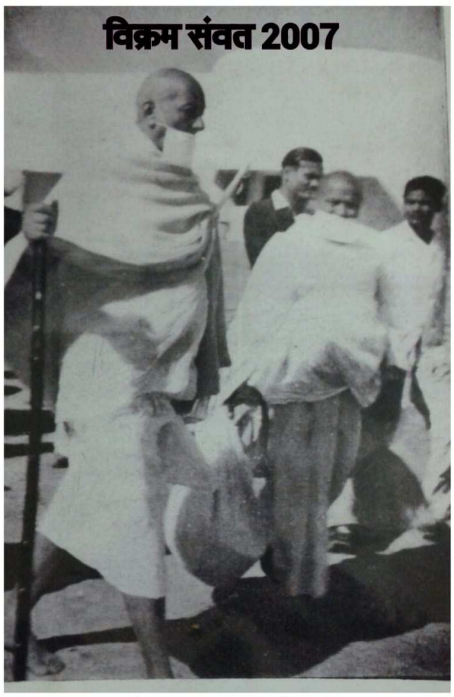


जैन दिवाकर जी मसा स्वयं गोचरी के लिए पधार रहे

द्वारा समाचार दे दिया गया।

गुरुदेव जब रतलाम पधार रहे थे तो रतलाम से 2 मील दूर तीनों संप्रदायों के तीन-चार सौ नर-नारी सेवा में उपस्थित हुए। वार्तालाप किया। बड़ा ही मधुर वातावरण रहा

हजारों नर - नारियों के जयघोष के साथ गुरुदेव ने रतलाम में प्रवेश किया।

जैन दिवाकरजी महाराज के प्रवचन नीम चौक में होने लगे। श्रोताओं की संख्या बढ़ने लगी। पंडाल पहले से ही बहुत बड़ा था। लेकिन उपस्थिति जब नगर के छह हजार और बाहर के पांच हजार - इस तरह 10 - 11 हजार श्रोताओं की होने लगी तो पंडाल और भी बढ़ाना पड़ा। प्रवचनों में हिंदू, मुसलमान, बोहरे, जैन - जैनेतर एवं अधिकारीगण सभी समान रूप से भाग लेते और वाणी का लाभ उठाते। पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज के संप्रदाय के श्रावक - श्राविका भी प्रवचन लाभ लेते थे। इस विशाल उपस्थिति को देखकर श्री सोमचंद तुलसीभाई को कहना पड़ा कि रतलाम में प्रवचनों में इतनी उपस्थिति मेरे देखने में नहीं आई।

निर्गृंथ प्रवचन सप्ताह मनाया गया। तपस्वी श्री माणकचंदजी महाराज ने 38 दिन की तपस्या की। इस के उपलक्ष्य में कसाईखाने बंद रहे, गरीबों को मिष्ठान खिलाया गयाऔर विभिन्न संस्थाओं को दान दिया गया। तपस्वी श्री बसंतीलालजी महाराज ने पंचोले पंचोले पारणे किए। आसोज सुदी में जैन दिवाकरजी महाराज की सेवा में ब्यावर, उदयपुर, मंदसौर, जावरा, इंदौर आदि अनेक स्थानों के मुख्य-मुख्य व्यक्ति उपस्थित हुए थे। उस समय महाराजश्री के मस्तिष्क में एक विचार आया कि- पूज्यश्री हुक्मीचंद जी महाराज का संप्रदाय कई वर्षों से दो भागों में विभक्त है। उनमें एक्य किस प्रकार हो सकता है* ? आपने कुछ प्रमुख लोगों के सामने अपने विचार व्यक्त किए। उस समय पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज जयपुर में विराजमान थे।

श्री देवराजजी सुराणा ब्यावर, श्री बापूलालजी बोथरा रतलाम, श्री सुजानमलजी मेहता जावरा, श्री सौभाग्यमलजी कोचेट्टा जावरा, श्री चांदमलजी मारू श्री चांदमलजी मुरडिया मंदसौर; ये छह व्यक्ति जयपुर पहुंचे। वहां करीब 5 दिन ठहरे। पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज को श्री जैन दिवाकरजी महाराज का संदेश दिया। ( शेष पेज नं. १९ पर )

॥ महावीरराय नमः:॥ ॥ गुरूदेवाय नमः ॥

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा.की जयंती पर शत् शत् नमन

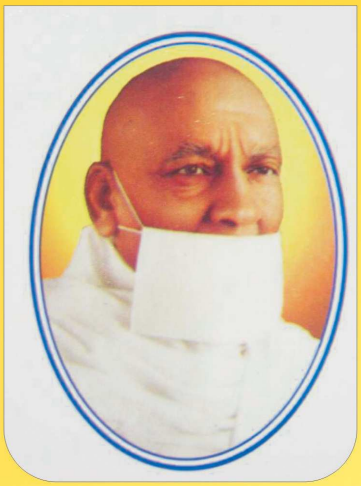

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

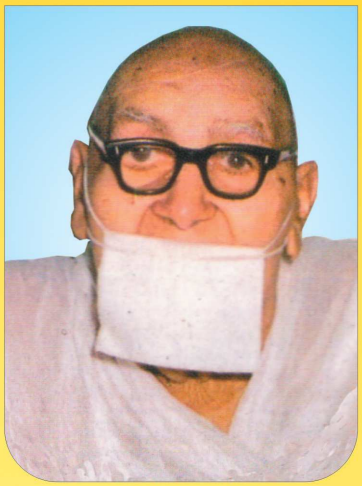

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

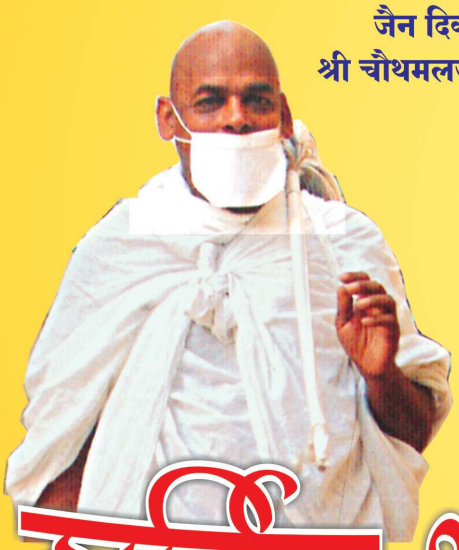

## जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता गुरूदेव श्री चौथमलजी म.सा. की 145 वीं जयंती श्री जैन दिवाकर हायर सेकेंडरी स्कूल रिंगनोद में आयोजित की गई

# हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

अभय श्रीमाल, रिंगनोद

रोला रोल रिंगनोद तह. जावरा जिला रतलाम मो. 9993354297

## जैन दिवाकर सुविचार....

**कहे चौथमल रात का, तू खाना छोड़ दे**
**रोगों की खआन जाने के दिल इससे मोड़।।**



# जीवनकाल के चार्तुमास.....

( पेज नं. १७ का शेष आलेख )

उस पर विचार करके पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज ने सात बातें एकीकरण के संबंध में लिखवाई। उनमें एक बात यह थी कि एक आचार्य होना चाहिए।

जैन दिवाकरजी महाराज ने सभी बातों के साथ एक आचार्य की बात भी स्वीकार कर ली, किंतु पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज को आचार्य बनाने की सहमति देकर अपनी उदारता भी प्रदर्शित की। लेकिन साथ ही साथ यह सुझाव भी दिया कि - क्योंकि अनेक वर्षों से अलग रहे हैं इसलिए आचार्यश्री के सम्मिलित संघ संचालन में पूज्यश्री मन्नालालजी महाराज के संप्रदाय के मुख्य मुनिराज की सम्मति अवश्य ले ली जाए।

यह संदेश लेकर श्री चंपालाल जी बंब जयपुर पहुंचे, परंतु पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया और चातुर्मास बाद अलवर की ओर विहार कर दिया।

कार्तिक शुक्ला नवमी को जैन कांफ्रेंस का एक शिष्टमंडल अध्यक्ष श्री कुंदनमलजी फिरोदिया के नेतृत्व में आया। महामंत्री श्री चिमनलाल पोपटलाल शाह, संयुक्त मंत्री श्री गिरधरभाई दामोदर दफ्तरी, श्री धीरजलाल भाई तुरखिया, श्री महासुख भाई, सेठ देवराज जी सुराना आदि सज्जन इस शिष्टमंडल में सम्मिलित थे। शिष्टमंडल के सभी सज्जन तीन दिन तक रतलाम में रहे। संघ एक्य योजना का शेष कार्य पूर्ण करने के उद्देश्य से जैन दिवाकरजी महाराज ने संघ एक्य योजना की महत्ता एवं शिष्टमंडल की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामना प्रकट की। एक्य के संबंध में चर्चा होने पर उनको सात बातें और उन बातों पर सुझाव बताए। श्री कुंदनमलजी फिरोदिया ने यह सब जानकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि *श्री जैन दिवाकर जी महाराज ने बड़ी उदारता के साथ सात बातें स्वीकार कीं - यह बहुत प्रसन्नता की बात है। आपकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। सातवीं कलम ( बात ) में दिया हुआ आपका सुझाव वास्तविक है कि इतने दिनों से अलग रहे हैं तो संघ एक्य बराबर निभे इसके लिए आचार्यश्री एक मुनिराज की सम्मति से संघ संचालन करें तो श्रेष्ठ है।

अध्यक्ष श्री फिरोदियाजी ने आप से आशीर्वाद की याचना करते हुए कहा -

आपने पहले पहल पाली ( मारवाड़ ) में हमें शुभाशीष प्रदान की थी। उसी प्रकार अब इस योजना के दूसरे वाचन के समय भी हम आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं।

जैन दिवाकरजी महाराज ने शिष्टमंडल एवं कान्फ्रेंस के सदकार्यों की प्रशंसा की, अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा रतलाम संघ को प्रेरणा दी कि समय को पहचान कर संगठन करना चाहिए।

कार्तिक शुक्ला 13 को गुरुदेव की 72 वीं जयंती मनाई गई। अनेक मुनियों एवं श्रावकों के भाषण - भजन आदि हुए। गुरुदेव के गुणगान किये, चरणों में श्रद्धा - भक्ति के पुष्प चढ़ाए, दीर्घायु के लिए कामना की। अनेक तरह के त्याग - प्रत्याखान, तपस्याऐं भी हुई।

जैन दिवाकरजी महाराज ने फरमाया कि गुणगान तो भगवान महावीर एवम जैन धर्म के होने चाहिए। मैं तो चतुर्विध संघ का सेवक हूं और यथाशक्ति सेवा कर रहा हूं और करता रहूंगा।

रात्रि को सेठ कन्हैयालालजी भंडारी इंदौर की अध्यक्षता में सभा हुई जिसमें विद्वान वक्ताओं और कवियों ने गुरुदेव के गुणगान किए। कई संस्थाओं की मीटिंगें भी हुई।

इस चातुर्मास में श्री कन्हैयालाल जी फिरोदिया आपश्री के संपर्क में आए। फिरोदियाजी ने सांप्रदायिक कारणों से किसी संत के प्रवचन सुनने की तो बात ही क्या, 35 वर्ष की आयु तक किसी संत के दर्शन भी नहीं किए थे। एक्य का वातावरण बना, चातुर्मास में आना - जाना प्रारंभ हुआ। प्रथम दर्शन और प्रवचन श्रवण करते ही उनकी कवि वाणी फूट पड़ी -

मेरा प्रणाम लेना
ओ जैन के दिवाकर, मेरा प्रणाम लेना।
आया हूं मैं शरण में, मुझको भी तार देना ।। टेक।।
करके कृपा पधारे, गुरुवर नगर हमारे।
उपकार यह तुम्हारे, भूलेंगे हम कभी ना ।। 1।।
वाणी अति सुहानी, निशदिन सुनाते ज्ञानी।
समझाते हैं खुलासा, है साफ-साफ कहना ।।2।।
चमके सभा के अंदर, तारों में चांद जैसे।
सूरत निरख - निरख कर, तरपत हुए हैं नयना ।।3।।
तारन - तरन तुम्हीं हो, प्यारे गुरु जहां में।
तुमको जो कोई छोड़े, उसका कहां ठिकाना ।।4।।
गफलत में सो रहा था, बर्बाद हो रहा था।
अब खुल गई हैं आंखें, हीरे का मोल जाना ।।5।।
करना कसूर मेरा, सब माफ अन्न दाता।
अर्जी करे कन्हैया, माफी जरूर देना ।।6।।

रतलाम श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री नाथूलालजी सेठिया ने चातुर्मास समाप्ति पर नीम चौक श्रीसंघ की ओर से श्री महावीर युवक मंडल एवं श्री धर्मदास मित्र मंडल को चांदी की तश्तरी भेंट दी। कर्मचारियों, जैन स्कूल के अध्यापिकाओं एवं ( शेष पेज नं. २० पर )

## जैन दिवाकर सुविचार....

*रात्री में फिरे और खावे, मनुज वह निश्चित कहलावे।*
*निशाचर रावण के भाई, नहीं रघुवन के अनुयायी।।*



# जीवनकाल के चार्तुमास.....

( पेज नं. १९ का शेष आलेख )

स्वयंसेवकों आदि को वस्त्र एवम नकद रकम से सम्मानित किया। विहार के दिन श्री चांदमलजी गांधी ने सपत्नीक शीलव्रत धारण किया। खुशी में 201 रूपये उछाल दिए। निषेध करने पर भी अन्य जैन-अजैन बंधुओं ने लगभग 1000 रूपये उछाल दिए।

स्टेशन पर जैन - अजैन जनता एवं सिनेमा मालिक मुल्ला नजर अलीजी ने व्याख्यान देने की पुरजोर प्रार्थना की। परिणामस्वरुप दो - तीन व्याख्यान वहां हुए। इस प्रकार जैन दिवाकरजी महाराज का रतलाम ( संवत 2006 ) का चातुर्मास अत्यंत गौरवशाली रहा। इसमें संघ एक्य योजना में प्रगति हुई, कांफ्रेंस के शिष्टमंडल को सफलता मिली। गुरुदेव के प्रवचनों में श्रोताओं की अत्यधिक संख्या रही। आपके उपदेशों से नवयुवकों में अपूर्व उत्साह भरा और धर्म जागृति हुई। पर्युषण में चार - पांच हजार दर्शनार्थी बाहर से आए। इन सब कारणों से इसे ऐतिहासिक चातुर्मास की संज्ञा दी गई है।

रतलाम चातुर्मास में ही आपको ज्ञात हुआ कि ब्यावर में स्थानकवासी संप्रदाय के मुनिवरों का सम्मेलन होने की चर्चा चल रही है। इस सम्मेलन में संगठन पर विचार - चर्चा होनी थी। नागदा में मालवकेसरी पंडित मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज का मिलन होने पर विचार-विमर्श करके उपाध्याय पंडित प्यारचंदजी महाराज तथा मालवकेसरीजी महाराज का सम्मेलन में जाने का निश्चय हुआ। उपाध्याय पंडित मुनि प्यारचंदजी को ब्यावर भेजते समय जैन दिवाकरजी महाराज ने अपना संदेश दिया संघ के कल्याण के लिए अपने संप्रदाय की सभी उपाधियों का त्याग कर देना। यदि सभी मुनिवर एकमत हो जाए तो आचार्य अपने संतों में से मत बनाना। आचार्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज को ही आचार्य स्वीकार कर लेना। श्री उपाध्यायजी महाराज ब्यावर पहुंचे। 9 संप्रदायों के मुनिवरों ने विचार-विमर्श करके एक समाचारी बनाई; किंतु एक आचार्य स्वीकार ने में गतिरोध उत्पन्न हो गया। 5 संप्रदायों की सहमति हो गई; किंतु चार की सहमति नहीं हुई। फलतः *श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमण संघ* की स्थापना हुई। श्री आनंद ऋषिजी महाराज को आचार्य बनाया गया।

उपाध्यक्ष श्री प्यारचंदजी महाराज ने रामपुरा में गुरुदेव के दर्शन किए। यहां महावीर जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। एक दिन एक शिष्य ने आपसे कहा - *गुरुदेव ! अपनी संप्रदाय की आचार्य आदि पदवियां समर्पित करके हमें क्या मिला ? हम तो घाटे में ही रहे।* तब आपने उसे समझाया -

हमें वणिकवृत्ति से घाटा - नफा नहीं सोचना चाहिए। संघ - लाभ के लिए सर्वस्व समर्पण करना उचित है। आज का बीज जब वृक्ष बनेगा तब एकता के मधुर फल आएंगे।*

इन शब्दों से प्रकट होता है कि जैन दिवाकरजी महाराज का हृदय कितना उदार था और कितनी निष्ठा थी संघ एकता के प्रति!

## जैन दिवाकर सुविचार....

**अंधा भोजन रात को, करे अधर्मी जीव**
**थोड़ा जीतव कारणे, दे नरंका में नींव ।।**



# मालव रत्न, उपाध्याय श्री कस्तुरचंदजी महाराज साहब के 117 वें दीक्षा दिवस पर संक्षिप्त जीवन परिचय

अभय सुराणा (पत्रकार) जावरा मो. 9827328328

श्रमण संस्कृति के एक ऐसे श्रमण जिनसे मानव जगत को सदा मार्गदर्शन मिला एवं जिन्होंने संसार को प्रकाश, उल्लास, और विश्वास का आलंबन दिया है। मझला कद, गौर वर्ण, भरा पूरा बदन, उन्नत ललाट, चमकते चेहरे पर बिखरती खिलती सी रहने वाली मुस्कान, मुख से निस्त्रत सी निकलने वाली अमृत वाणी, सतत, शांति बरसाने वाले युगल नेत्र ऐसे अनूठे अनुपम व्यक्तित्तव जिन्हें हम स्थविरपद विभूषित, मालवरत्न, ज्योतिषाचार्य, करुणा सागर, उपाध्याय प्रवर श्री कस्तुरचंदजी म. सा. के नाम से पहचानते है, उनके 117 वें दीक्षा दिवस पर उनके जीवन वृत्त से जुड़े कुछ दष्ट्रांत -

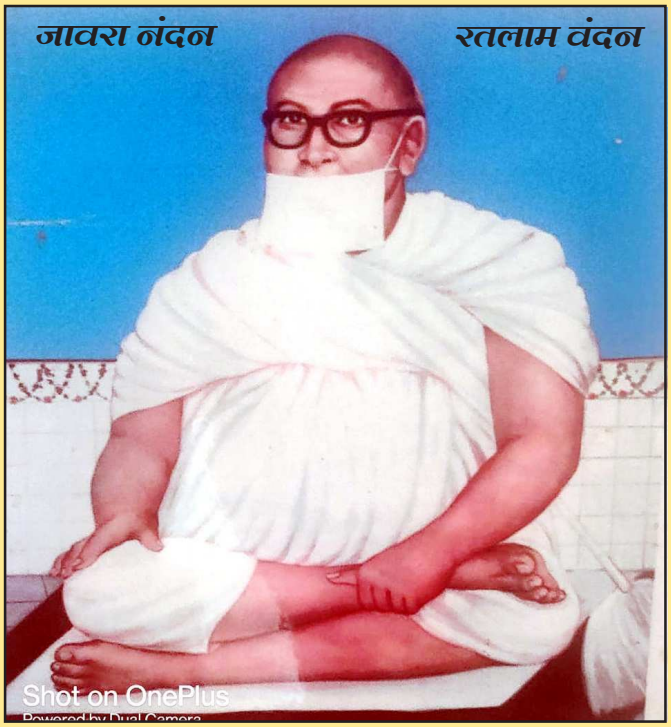


आप का जन्म मालवा भूमि के जावरा शहर में वि. सं. 1948 की जेष्ठ कृष्णा त्रयोदशी को पिताश्री श्री रतिचंदजी चपलोत के अंगना एवं माताश्री श्रीमती फूली देवी की कुक्षि से हुआ। वि. सं. 1956 के दुष्काल एवं वि. सं 1960 के प्लेग के दुष्काल में आपने अपने परिवार के आठ परिजनों को खो दिया। सोचिए उस बालक की क्या मनः स्थिति रही होगी, कैसे स्वयं को सम्हाला होगा।

वि. सं. 1962 में पंडित प्रवर पूज्य श्री खुबचंदजी म. सा. चातुर्मास जावरा में हुआ। लेकिन गुरुदेव के प्रवचन का सानिध्य नियमित लेते हुए, गुरुदेव ने *नत्थि काल्स अणागमो * अर्थात प्रतिपल काल का आक्रमण चालु है। यह उपदेश आपके जीवन में वैराग्य के अंकुरण कर गया। और गुरुदेव से कहा कि आपके उपदेश श्रवण कर में दीक्षा लेना चाहता हुँ। संवत 1962 की कार्तिक शुक्ला तेरस को रामपुरा में गुरु श्री जवाहरलालजी म. सा. के सानिध्य में पूज्य श्री खूबचंदजी म.सा. की निश्राय में आम के पेड़ के नीचे लालबाग, रामपुरा जिला नीमच में हजारों धर्म प्रेमी जनता के बीच दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा के पश्चात आपने जैन शास्त्रों एवं आगम का गहन अध्ययन कर तप, साधना, संयम, विवेक, ज्ञान एवं चारित्र की कठोर तपस्या की। अपनी दीर्घ दीक्षावधि में आपने उत्तरांचल में जम्मू - कश्मीर से लेकर सुदूर दक्षिण भारत तक पैदल धर्मानुकूल विहार कर कोटि -कोटि जैन व अजैन जनता को अपनी सुमधुर वाणी की ज्ञान - गंगा प्रवाहित कर परोपकार एवं अहिंसा का अमर पाठ पढ़ाया।

वि.सं.1975 का वर्षावास करने कोटा पधार रहे थे,रास्ते में साथी मुनि भेरुलालजी को अत्यंत तेज बुखार हो गया, गाँव में कोई जैन घर नहीं, एक टुटे- फूटे से स्थान पर रात्रि विश्राम हेतु रुके, रात्रि को तेज आँधी तुफान और तेज वर्षा के कारण छत से भी पानी आने लगा। रुग्ण साथी को बचाने के लिए आप और मुनि कजोड़ीमलजी रात भर चादर ताने खड़े रहे। ज्वर न उतरने पर आप तीनों मुनियों के उपकरणों को लेकर 19 मील चलकर कोटा पहुँचे। वहाँ उपकरण रख पुनः अपने साथियों के पास गये और उन्हें लेकर कोटा वापस आये।

उज्जैन से जावरा की और विहार के रास्ते में ज्वर से पीड़ित एक पटेल ने आपसे विनती की कि मुझे कोई मंत्र सुनाओ , मै ज्वर से पीड़ित हुँ। तब आपने जैन दिवाकर चौथमल जी रचित - *साता की जो जी श्री शांतिनाथ प्रभु शिवसुख दीजो जी * स्तवन एवं मांगलिक श्रवण करवाया,और कुछ ही देर में ज्वर उतर गया। कुछ ही देर में पुरे गाँव में खबर फेल गई और गुरुदेव के पास मेला लग गया और विहार में बहुत देरी हो गई। आचार्य श्री मन्नालाल जी महाराज का चातुर्मास जब रामपुरा श्री संघ को मिला। रामपुरा श्री संघ की खुशी अपार हो गई थी।

जैन शास्त्रों के मर्मज्ञ ज्ञाता होने के साथ-साथ ज्योतिषशास्त्र के प्रकांड पंडित भी है। नक्षत्र लोक ( शेष पेज नं. १९ पर )

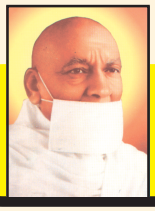

## जैन दिवाकर सुविचार....

**दीजो दान सदा रे दीजो दान सदा, जां घर वरते सुख सम्पदा।**
**भव में वेराई थी खीर, शालिभद्र जैसा हुआ आमीर।**



# श्रमण संघीय महामंत्री घोर तपस्वी श्री मोहन मुनि जी महाराज सा. 99 वी जन्म जयंती दिवस पर आपका जीवन परिचय

आपका जन्म शाहपुरा ( जिला भीलवाड़ा ) राजस्थान में माता श्रीमती गुलाबबाई पारख की कुक्षि से एवम श्रीमान सेठ मांगीलालजी सा. पारख के घर आंगन में अगहन कृष्णा पंचमी,वि.सं.1980 4मंगलवार ( ईस्वी सन 16.12.1924 ) को हुआ। 20 वर्ष की युवावस्था में आषाढ शुक्ला सप्तमी,वि.सं.2000( ईस्वी सन 27.06.1944 ) रविवार को आपने पूज्यश्री हजारीमल जी म.सा की0 निश्राय में महामंदिर जोधपुर में संयम धारण कर लिया।

यदि हम मुनिश्री के नाम व दीक्षा तिथि के विषय में चिंतन, मनन, तथा विश्लेषण करें तो जहां तक नाम का संबंध है व्याकरण की दृष्टि से मोहन शब्द मोह +न = मोहन। जिसमें मोह नहीं, अर्थात संत। दीक्षा संवत 2000 यह संख्या पूर्णता को दर्शाती है। शुक्ल पक्ष का संबंध उज्जवलता - निर्मलता से है। रविवार का संबंध रवि ( सूर्य ) से है। रवि तप, तेज सेवा सहिष्णुता का प्रतीक है। इसी कारण मुनि श्री सेवा, समर्पण, संतत्व तप - तेज - तपस्या तथा सहिष्णुता के प्रतिरूप है। जैन दिवाकर गुरुदेव श्री चौथमल जी म.सा से प्रभावित हो आप उनके सेवा में आ गये। गुरु - शिष्य का रिश्ता राम और हनुमान की जोड़ी से पहचाना जाने लगा। यह हनुमान दिवाकर जी के कार्यों को/ सपनों को निरंतर आगे बढ़ाने का प्रण लिये जिनशासन को आगे बढा रहा था। जो भी कार्य को करने का बीड़ा अपने हाथों में लिया, उसे पुरा करके ही दम लिया। चाहे जो कठिनाई, मुश्किले हो, मोहन का हाथ जहाँ लगा समझो पुरा होना ही है, उनकी वाणी में दम और चेहरे पर ओजस्विता स्वतः दिखती थी। इंदौर का इमली बाजार स्थित विशाल और भव्य नवीन महावीर भवन। मोहन मुनि जी काले डण्डे वाले के

नाम से बच्चा- बच्चा उन्हें पहचानता है ( यह गुरुदेव जैन दिवाकर जी का ही डंडा था ) जो उन्हें गुरुभक्ति में गुरुदेव से मिला और उन्हे जान से भी ज्यादा प्यारा था, क्योंकि उस के साथ उनके गुरुदेव की यादें जुड़ी हुई थी।आज जो भी जैन दिवाकर भक्त हैं उन्हें जोड़े रखने में उनका महत्व पूर्ण योगदान रहा है, ऐसा कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आपश्री की प्रेरणा से कई संस्थाए प्रारम्भ हुई जो कि जैन दिवाकर जी के नाम से ही है :-

श्री जैन दिवाकर स्मारक सागोद रोड , रतलाम

श्री जैन दिवाकर हास्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर सागोद रोड, रतलाम

श्री जैन दिवाकर हास्पीटल, कोटा

श्री जैन दिवाकर चिकित्सालय, नीमच

जैन दिवाकर सामायिक साधना भवन रतलाम कोठी, इन्दौर

जैन दिवाकर सामायिक भवन महावीर नगर, इन्दौर , इंदौर और रतलाम में भोजन शाला, विद्यालय, रतलाम में वृद्धाश्रम, बोलिया में हास्पिटल, नामली में स्थानक आदि।

आपश्री ने वर्षो तक एकान्तर तप किये, बेले-बेले पारणे किये , कितने ही समय तक अन्न का त्याग किया। श्री मोहन मुनि जी को श्रमण संघ के प्रथम आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने तपस्वीराज द्वितीय आचार्य श्रीआनंदऋषिजी म.ने संघ सेवाभावी तृतीय आचार्य श्री देवेंद्र मुनि जी म. ने वरिष्ठ सलाहकार एवम श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य श्री शिवमुनिजी म. ने संघ के महामंत्री पद पर मनोनीत किया। इस प्रकार मुनिश्री को श्रमण संघ के चारों आचार्यों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। जैन दिवाकर जी के एकता के सूत्र को आपने अपने दिल में बसाये रखा था । मोहन मुनि जी महाराज सा इसी पावन उद्देश्य को लेकर आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज सा. से श्रमण संघ में कैसे एकता बनी रहे विचार विमर्श करने के लिए धुन का पक्का धुनी यह हनुमान रतलाम से दिल्ली की और निकल पड़ा। ऐसी लगन ,ऐसा विश्वास, बिरले ही मिलते है। जयपुर तक पहुँच भी चुके थे। अब दिल्ली दूर नहीं थी। मन में एकता के भाव और ज्यादा मजबुत हुए, और 26.05.2007 अचानक दूदू के पास 85 वर्ष की उम्र मेंसड़क दुर्घटना में आपके प्राण पखेरू फूर्र..... हो गये। और एक ओजस्वी तपस्वी संत ( 64 वर्षीय संयमी जीवन ) हमारे बीच नहीं रहे। शायद नियति को उनकी इस लोक से भी ज्यादा जरूरत रही होगी। आज हमारे बीच आप नहीं है, परन्तु उनसे जुड़ा हर परिवार, उस परिवार का छोटे से छोटा बच्चा भी आपको याद करता है, स्मरण करता है। आप सभी को इतना स्नेह, प्यार से अभिसिंचित कर देते थे कि परिवार दौड़ता हुआ आपके दर्शन करने आता था। आपकी स्मरण शक्ति इतनी तेज थी कि सभी को नाम से संबोधित कर हर एक का दिल जीत लेते थे। बच्चों से वृद्ध तक के चहेते श्रमण संघीय महा मंत्री घोर तपस्वी पूज्य श्री मोहन मुनि जी महाराज सा. को उनके 99 वे जन्म जयंती दिवस पर सादर नमन वंदन अभिनंदन ।आपकी कृपा और आशीर्वाद संघ, समाज, और परिवार पर सदैव बना रहे।

संकलन/प्रस्तुति - सुरेन्द्र मारू, इंदौर
मो. 98260 26001

## जैन दिवाकर सुविचार....

**दान, शील, तप, भावना, जांके सरधा होय।**
**चलाजाय बैकुंठमें पला न पकड़े कोय।।**



# जैन दिवाकरजी म.सा. के विहार एवं चार्तुमास की संक्षिप्त जानकारी

साभार - जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी महाराज और उनका हिंदी साहित्य।

लेखिका - जैन दिवाकर साध्वी साध्वी डॉ. सुशील जी म. सा., संकलन/प्रस्तुति - सुरेन्द्र मारू, इन्दौर +91 98260 26001

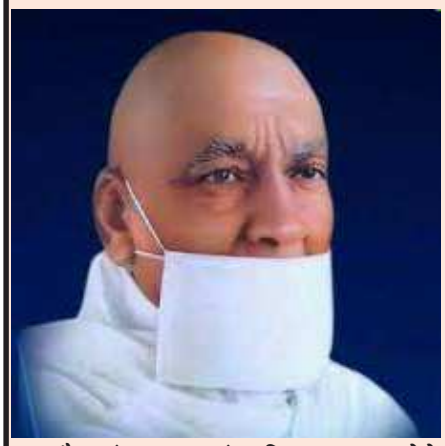

जैन संत श्रमण संस्कृति का श्रमण होने के नाते गामा-नुगामी होता है।अपने विधान के अनुसार वर्षावास के चार माह के अतिरिक्त निष्प्रयोजन एक स्थान पर नहीं ठहरता। आत्म कल्याण और जनकल्याण की दृष्टि से वह हिमालय कश्मीर से कन्याकुमारी, अटक से लेकर कटक, पर्यंत, समग्र देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पदयात्रा करता हुआ, कल-कल करती हुई सरिता की जलधारा तुल्य निरंतर गतिमान रहता है।

चरैवेति - चरैवेति ही उनका सिद्धांत होता है। वह रुकता भी तब है जब सांस - सांस उसे मृत्यु के निकट की गवाही देने लगे। उनके पास व्यक्तिगत मठ या संपत्ति नहीं होती।अप्रतिबद्ध - अकिंचन बनकर सर्वत्र निर्भरता के साथ भ्रमण करना ही उनका जीवन है। यात्री बनकर परमात्मा स्वरुप को पहचाना जा सकने की भावना शताब्दियों पहले संत कबीर ने कही दी थी- कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लकुटिया हाथ। जो घर फूंके आपनो, चले हमारे साथ। बाजार में खड़े होने, लकुटी हाथ में लेने और घर फूंकने वाली बात कहने के पीछे कबीर का एकमात्र उद्देश्य ( शेष पेज नं. २४ पर )

### जैन दिवाकर जी महाराज के चातुर्मासों की विधिवत सूची

| विक्रम संवत | शहर | प्रदेश | वि. सं. | शहर | प्रदेश |
|---|---|---|---|---|---|
| 1953 | झालरापाटन | राजस्थान | 1981 | घाणेराव सादड़ी | राजस्थान |
| 1954 | रामपुरा | मध्यप्रदेश | 1982 | ब्यावर | राजस्थान |
| 1955 | बड़ी सादड़ी | राजस्थान | 1983 | उदयपुर | राजस्थान |
| 1956 | जावरा | मध्यप्रदेश | 1984 | जोधपुर | राजस्थान |
| 1957 | रामपुरा | मध्यप्रदेश | 1985 | रतलाम | मध्यप्रदेश |
| 1958 | मंदसौर | मध्यप्रदेश | 1986 | जलगांव | महाराष्ट्र |
| 1959 | नीमच | मध्यप्रदेश | 1987 | अहमदनगर | महाराष्ट्र |
| 1960 | नाथद्वारा | राजस्थान | 1988 | बम्बई | महाराष्ट्र |
| 1961 | खाचरोद | मध्यप्रदेश | 1989 | मनमाड | महाराष्ट्र |
| 1962 | रतलाम | मध्यप्रदेश | 1990 | ब्यावर | राजस्थान |
| 1963 | कानोड़ | राजस्थान | 1991 | उदयपुर | राजस्थान |
| 1964 | जावरा | मध्यप्रदेश | 1992 | कोटा | राजस्थान |
| 1965 | मंदसौर | मध्यप्रदेश | 1993 | आगरा | उत्तरप्रदेश |
| 1966 | उदयपुर | राजस्थान | 1994 | कानपुर | उत्तरप्रदेश |
| 1967 | जावरा | मध्यप्रदेश | 1995 | दिल्ली | केंद्र शासित |
| 1968 | बड़ी सादड़ी | राजस्थान | 1996 | उदयपुर | राजस्थान |
| 1969 | रतलाम | मध्यप्रदेश | 1997 | जोधपुर | राजस्थान |
| 1970 | चित्तौड़ | राजस्थान | 1998 | ब्यावर | राजस्थान |
| 1971 | आगरा | उत्तरप्रदेश | 1999 | मंदसौर | मध्यप्रदेश |
| 1972 | पालनपुर | उत्तरप्रदेश | 2000 | चित्तौड़गढ़ | राजस्थान |
| 1973 | जोधपुर | राजस्थान | 2001 | उज्जैन | मध्यप्रदेश |
| 1974 | अजमेर | राजस्थान | 2002 | इंदौर | मध्यप्रदेश |
| 1975 | नया शहर ब्यावर | राजस्थान | 2003 | घाणेराव सादड़ी | राजस्थान |
| 1976 | दिल्ली | केंद्र शासित | 2004 | ब्यावर | राजस्थान |
| 1977 | जोधपुर | राजस्थान | 2005 | जोधपुर | राजस्थान |
| 1978 | रतलाम | मध्यप्रदेश | 2006 | रतलाम | मध्यप्रदेश |
| 1979 | उज्जैन | मध्यप्रदेश | 2007 | कोटा | राजस्थान |
| 1980 | इंदौर | मध्यप्रदेश | | | |

**इस प्रकार कुल 55 चातुर्मास 27 स्थानों पर हुए।**

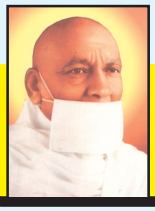

## जैन दिवाकर सुविचार....

**चौथमल कहे भोगो से, गया नहीं तृप्य हो कोई।**
**जिनातम – ज्ञान के प्यारो, सब हर्गिज नहीं आता।।**



# जैन दिवाकरजी म.सा. के विहार.....

( पेज नं. २३ का शेष लेख )यही था कि साधुता घर बसाने में नहीं है। वह तो महल से मरघट और जनपद से निरापद में आनंद की सुगंध भर देने में है।

शिक्षा की पूर्णता यात्रा में है। यूरोप में बिना यात्रा के शिक्षा को अपूर्ण माना जाता है। प्राचीन भारत भी तीर्थ यात्राओं को महत्व देता रहा है। विज्ञान के इस युग में जहां पंख की उड़ानों से गति देकर यात्रा हो रही है, वहां वाहन का उपयोग न करते हुए पद - यात्रा करना आश्चर्य का विषय है। सुदूर ग्रामीण अंचलों में बसे लोगों के जीवन, भावना और सांस्कृतिक मूल्यों का अवलोकन पद- यात्री ही कर सकता है। पद- यात्रा के माध्यम से व्यक्ति का ज्ञान एवं दृष्टिकोण व्यापक और उदार बनता है। पद- यात्रा से व्यक्तित्व का विकास एवं जन- संपर्क में वृद्धि होती है। प्रकृति के सौंदर्य अवलोकन का सही आनंद पद- यात्री ही ले सकता है। कहां भीड़ो से संकुल वाहनों की यात्रा और कहां शांत तथा नीरव पद- यात्रा। वाहन यात्रा के लिए अर्थ आवश्यक होता है, और जैन परिव्राजक के पास ( जैन मुनि के पास ) अर्थ का होना अनुपयुक्त व चारित्रिक पतन का कारण है। जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी महाराज एक जैन साधु थे।अत: उनके लिए भी पद- यात्रा एक धार्मिक दायित्व था। पद- यात्री बनकर उन्होंने सुदूर देश - प्रदेशों का भ्रमण किया था। बैठना उनकी दृष्टि में पराजय और चलना उनकी दृष्टि में परम विजय थी। जैन मुनियों के कल्प के अनुसार दिवाकर जी महाराज ने संयमी जीवन के 55 वर्ष में भ्रमण करते हुए भारतवर्ष के उत्तर से लेकर दक्षिण, व पूर्व से लेकर पश्चिम तक विभिन्न प्रांतों में विचरण किया। आपका बिहार- क्षेत्र अति - विस्तृत रहा है। शीत - गर्मी, आंधी, वर्षा तूफान तथा कंकरीले, पथरीले, पहाड़ी और वनैले मार्गों के सैकड़ों परिषहों को हंसते- सहते हुए भारत भूमि के विशाल वक्ष-स्थल पर यत्र - तत्र बिखरे हुए गांवों - शहरों में मानव - धर्म का संचार किया। मालवा- मध्य भारत, वर्तमान में मध्य - प्रदेश /मेवाड़- मेवाड़, मारवाड़, राजपूताना वर्तमान में राजस्थान के प्रांत तो आपकी प्रधान विहारभूमि रही थी। साथ ही गोड़वाड़, झालावाड़, ढूंढाड़, हाड़ोती, सौ सौंधवाड़, यू.पी.,सी.पी.,/ संयुक्त प्रांत - सौराष्ट्र,महाराष्ट्र, गुजरात, काठियावाड़, पंजाब/ दक्षिण प्रांत- बम्बई, दिल्ली, नागपुर आदि भारत के विभिन्न अंचल भी इनसे अछूते न रहे। संयमी जीवन के 55 वर्षों में उन्होंने लगभग 50000 मील की पैदल यात्रा की है।

दिवाकर जी महाराज अपने दीक्षा काल में भारत का भ्रमण करते रहे पर संसार उन्हें न छू सका। वे संसारस्थ लोगों को छू-छूकर बताते रहे कि संसार की वास्तविकता को समझो। कहीं मोह, वासना और आकांक्षा तुम्हारे आत्मधन को अजगर की तरह निगल न जाए।

# मालव रत्न, उपाध्याय ....

( पेज नं. २१ का शेष आलेख ) की जानकारी आप की अध्ययनशीलता की द्योतक है।

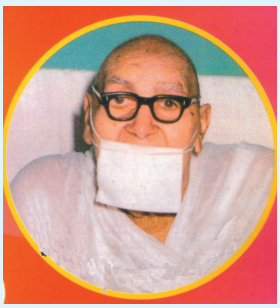

आपकी प्रतिभा ज्ञान- संयम- तप गरिमा दिन दूनी रात चौगुनी बढती ही रही। फलस्वरूप वि. सं.2002 में आपको गणीपद,वि.सं.2016 में सम्प्रदाय के प्रवर्तक पद और संवत 2033 में आचार्य सम्राट पूज्यश्री आनंदऋषिजी म.सा ने आपको श्रमण संघ का उपाध्याय पद प्रदान किया।

अनाथ एवं गरीब भाई - बहनों के लिए तो आप करुणा के सागर ही थे। विधवा एवं विद्यार्थियों के प्रति आप सदा अति उदार दृष्टिकोण रखते थे ।आपके सदु - पदेश से प्रभावित होकर अनेक दानी धर्म प्रेमी सज्जन प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से साधर्मी सहायता का शुभ कार्य करते थे। इसी क्रम में भविष्य में भी ऐसे लोगों को निरंतर सहयोग प्रदान करते रहने की दृष्टि से गुरुदेव श्री संघों एवं सक्षम व्यक्तियों को साधर्मी सहायता प्रदान करते रहने की प्रेरणा देते रहते थे। यह पुनीत कार्य भी आपकी साधर्मी - वात्सल्यता, महानता एवं हृदय की विशालता को प्रतिबिंबित करता है।

यह गुरुदेव की वाणी एवं व्यवहार की ही विशेषता है कि अनेक व्यक्ति आपसे प्रभावित होते थे। क्या जैन और क्या जैनेतर, सभी संप्रदाय व धर्म के लोग समभाव से आप के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए आपको नमन करने के लिए आते थे। गुरुदेव का प्रेम सभी के प्रति समान रहता था। भेदभाव व संकीर्णता को तो उन्होंने अपने जीवन में कभी स्थान दिया ही नहीं।

पूज्य गुरुदेव वर्तमान पीढ़ी में उन महान संतों में से एक हैं जिनके त्यागमय जीवन, आजीवन साधुवृत्ति, वात्सल्य भाव, तप, धर्म व चारित्रिक निर्मलता के कारण भारत आज भी विश्व में महा - मनीषियों का देश बना हुआ है। आप जैसी महान विभूति किसी देश, संप्रदाय अथवा समाज को बड़े पुण्योदय से प्राप्त हो सकती है। वर्तमान जैन समाज आपके त्यागमय महान व्यक्तित्व से प्राप्त करता रहा है, और कर रहा है, तथा भावी पीढ़ी भी आपके प्रति सदा श्रद्धावनत रहेगी।

लगभग 94 वर्ष की उम्र पूर्ण कर 80 वर्ष की दीक्षा पूर्ण कर संवत 2042 की आसोज शुक्ला नवमी दिनांक 22 अक्टूबर,1985 को आपका देवलोकगमन रतलाम शहर में हुआ। *ऐसे महान ज्योतिर्धर , उपाध्याय , पूज्य गुरुदेव श्री कस्तुरचंदजी म.सा. के 117 वे दीक्षा दिवस पर अनन्त आस्था के साथ वंदन, नमन , अभिनंदन आपकी कृपा और आशीर्वाद सदैव संघ, समाज, एवम परिवार पर बना रहे।

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

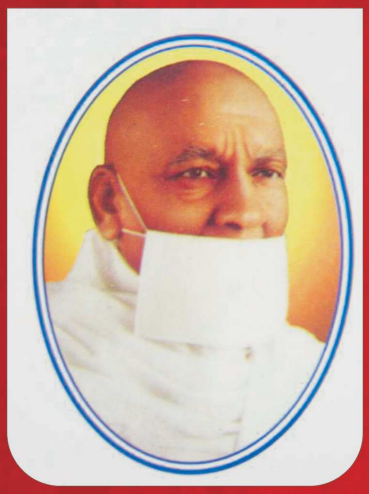

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

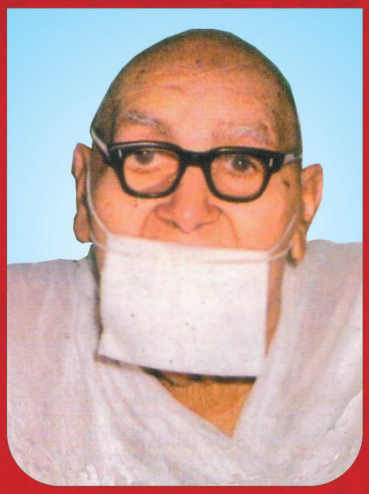

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

तप. श्रमणसंघीय महामंत्री
श्री मोहनमुनिजी म.सा.

## 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरु दीक्षा जयंती पर समस्त गुरूभक्तों का

# हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

पूज्य गुरूदेव धर्ममुनिजी म.सा.से हरियाणा चार्तुमास में दर्शन करते श्री जैन

इंदरमलजैन (वकील सा.)
संघ रत्न नीमचौक,संघ रतलाम
श्री शातांबाई इंदरमल जैन, परिवार,
जैन कॉलोनी, राजवाड़ा, रतलाम

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

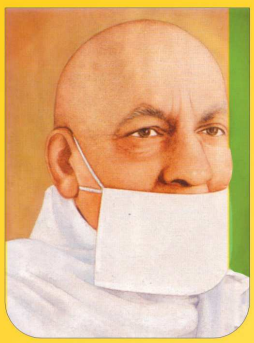

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

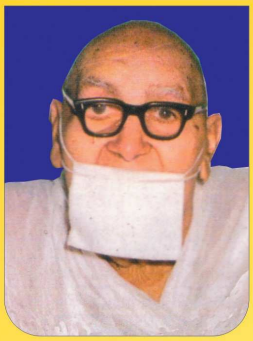

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

तप. श्रमणसंघीय महामंत्री
श्री मोहनमुनिजी म.सा.

## 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती पर समस्त गुरूभक्तों का हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

**ऑनलाईन प्रक्रिया के स्थान पर सीधे प्रवेश, प्रवेश हेतु सीधे महाविद्यालय में सम्पर्क करें व्यूनतम शुल्क में स्थान आज ही सुनिश्चित करें।**

**स्नातक पाठ्यक्रम**

**बी.एस.सी.**

✲ हार्टिकल्चर, सीड टेक्नॉलाजी
✲ कम्प्युटर सांईस, बायोटेक्नॉलाजी
✲ मेथेमेटिक्स ✲ माइक्रो बॉयोलाजी

**बी कॉम**

✲ प्लेन ✲ कम्प्युटर एप्लीकेशन ✲ टेक्सेशन

बी.ए., बी.एस. डबव्ल्यु

**स्नातक पाठ्यक्रम एम.एस.सी.**

✲ कम्प्युटर साईंस ✲ गणित ✲ सीड टेक्नॉलाजी

एम.एस. डब्ल्यु., एम.कॉम. पी.जी.डी.एस.ए.बी.एड., डी.एल.एड.

✲ शहर के मध्य पूर्ण विकसित केम्पस ✲ ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट सुविधा
✲ अनुभवी एवं उच्च शिक्षित प्राध्यापक ✲ होस्टल सुविधा (निवेदन आधारित)
✲ आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं
✲ वाई-फाई इंटरनेट केम्पस एवं कम्प्युटर लेब
✲ स्पोकन इंग्लिश, कम्प्युटर एवं व्यक्तित्व विकास एवं विशेष कक्षाएं

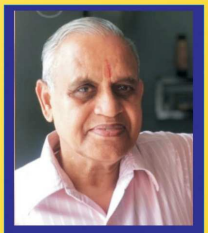

डॉ. नरेन्द्र धाकड़
इंदौर

**विस्तृत जानकारी तथा प्रवेश फार्म हेतु**

**सम्पर्क : 0731-4291111, 9626044555 समय: सुबह 9.00 से शाम 5.00 बजे तक**

✲ उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. द्वारा मान्यता प्राप्त ✲ देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इंदौर से संबंद्ध

# श्री जैन दिवाकर महाविद्यालय

प्लाट नं. 665 स्कीम नं. 55-सी न्यू पलासिया (जंजीरवाले चौराहे के पास) इंदौर-01 (म.प्र.)
फोन नं - 0731-4063832, 9826044556, ईमेल
Sjdmindore@gmail.com/info/sjdcollege.website org, www.sjdcollege.org

## जैन दिवाकर सुविचार....

*खेती-पानी विनती चौथी चले खुजाल ।*
*दान, मान-सम्मान तो हाथो हाथ संभाल ।।*



# आदर्श त्यागी एवं परम धैर्यवान आचार्य थे पूज्य श्री खुबचंद जी म.सा.

आचार्य श्री खुब चंद जी म.सा. का जन्म निम्बाहेड़ा ( राज ) में संवत 1930 की कार्तिक शुक्ला अष्ठमी को हुआ आपके पिताश्री श्री टेक चंद जी जेतावत व मातुश्री धर्म परायण श्री गेंदी बाइ थी! आप बचपन से ही गम्भीर व शान्त स्वभावी थे !16 वर्ष की उम्र में आपका विवाह अठाना( म. प्र ) निवासी श्री देवीलाल जी सा बोहरा की सुपुत्री साकर कुंवर के साथ संवत 1946 की मगसर शुक्ला पूणिमा को सम्पन्न हुआ । आपकों बचपन से ही सन्त मुनिराजो के साथ रहने का व प्रवचन सुनने की रुचि थी । आपकी उम्र जब बीस वर्ष की हुई आपको वेराग्य भाव जागृत हुआ एवम हृदय में एसा विचार आया कि मुजे अब सांसारिक कार्यों में रुचि नही रखना है व सन्त जीवन स्वीकार करना हे । वेराग्य भाव प्रकट होने की भी एक घटना हे आप जब सोये हुए थे आपके पिताश्री ने कहा खुबा उठ अभी तक सोया हे ओर दिल में यह भावना जागृत हुई कि में वास्तव में सोया हुआ हूं मुजे जगना चाहिये ओर आत्म कल्याण की ओर बढ़ना चाहिये ।एक दिन हिम्मत करके अपने पिताश्री के समक्ष हिम्मत करके यह बात रख ही दी परिवार में एकदम हलचल मचगइ! सभी परि जनो ने बहुत सम जाया पर वेराग्य का एसा रंग था कि उतरने का नाम ही नही था ।दो वर्ष ऐसे ही चलते रहे ओर घर वालो ने दीक्षा की आज्ञा प्रदान करदी एवम संवत 1952 की असाढ़ शुक्ला तीज को महान उपकारी , वादीमान मर्दक पूज्य श्री नंदलाल जी म.सा के पावन सानिध्य में उदयपुर में जैन भगवती दीक्षा ग्रहण कर ली! दस वर्ष बाद आपकी पत्नी ने भी दीक्षा ग्रहण की जो महासती श्री साकर कुंवर जी के नामसे जाने गये।

जन्म जयन्ती पर विशेष
प्रस्तुति - विजय कुमार लोढा
निम्बाहेड़ा ( पूणे )

### गुरु जैन दिवाकर जी व आचार्य श्री खूब चंद जी महाराज साथ साथ वैरागी रहे व ज्ञान सीखा

श्री खूब चंद जी म.सा ने संयम लेते ही गुरु जी के संग रहते बहुत ही ज्ञानाभ्यास किया व आगमो का गहन अध्ययन किया , प्राकृत व संस्कृत भाषा का विशेष रूप से अध्ययन किया । आप थोड़े ही समय में बहुत हो मजे हुए प्रवचनाकार बन गये । आप गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित एवम बहुत धेर्यवान थे, कोइ भी बात सामने आती तो उसको बहुत ही गम्भीरता से समज कर शान्त भाव से उसका हल निकालने का प्रयास करते। आपकी इसही विशेषता से जब संवत 1990 का अजमेर साधु सम्मेलन अजमेर में हुआ तब सम्प्रदाय के प्रतिनिध रूप में आप वंहा पधारे व अपने व्यहवार व परामर्श से अन्य सम्प्रदायो के सन्तो का दिल जीत लिया। पूज्य श्री हुकमी चंद जी म.सा के पाट परम्परा के पांचवे आचार्य अखण्ड यशधारी श्री मन्ना लाल जी म.सा का देवलोक गमन होगया तो सभी संतमुनिराजो व संघ की सहमति से आपको संवत 1991 की चेत्र शुक्ला तीज को आचार्य पद पर आसीन किया। कहते है कि सम्प्रदाय में पाट के मालिक आचार्य प्रवर श्री खूब चंदजी म.सा व ठाठ के मालिक जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा थे। दोनो सन्तो की युगल जोड़ी से सम्प्रदाय का पुरे देश में सुयश फैला ।

### आचार्य श्री खूब चंद जी म.सा के मुखारविंद से जैन दिवाकर की पदवी

आचार्य श्री खुब चंद जी म.सा जब मन्दसौर में विराजमान थे आपके श्री मुख से चौथमल जी म.सा को जैन दिवाकर की पदवी प्रदान की गइ आज आप देखिये की आज मुनि श्री को चौथमल जी महाराज के नामसे कम पहचानते हे व जैन दिवाकर के नामसे ज्यादा पहचानते हे।

### प्रमुख कविवर के रुप में पहचान

आपने कई स्तवनो, लावणीयो, चारित्रो की रचना लोकभाषा में करी आजभी पुराने श्रावक जब गाते है जुम जाते है । आपकी कविता का एक संग्रह खुब कवितावली के नामसे प्रकाशित हुआ है बहुत ही गजब की रचनाए हे। उनकी एक रचना बहुत प्रसिद्ध हे उसका कुछ अंश आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं

मत भूलो कदा रे मत भूलो कदा, वीर प्रभु का गुण गाओं सदा
जल से नहाया तन मेल हटे, प्रभु जी की वाणी से पाप कटे
मत भूलो कदा जी मत भूलो कदा

जैन दिवाकर गुरुदेव ने व आचार्य श्री खूब चंद जी म.सा ने संयुक्त रूप से , दान, शील, तप, भावना पर सुंदर लावणीये लिखी हे , जिनको सुन कर होठ थिरकने लगते है ।

आचार्य श्री खूब चंद जी म.सा के प्रमुख शिष्य , उपाध्याय श्री कस्तुर चंद जी म.सा , सलाहकार श्री केसरी मल जी म.सा, सुख लाल जी म.सा., हजारी मल जी म.सा., हर्ष चन्द जी म.सा हे! मेवाड़ भूषण प्रताप मल जी म.सा आपके गुरु भ्राता थे । दिल्ली संघ की विनती पर आप काफी समय दिल्ली बिराजे , ब्यावर संघ की पुरजोर विनती स्वीकार करके आप दिल्ली से विहार कर ब्यावर पधारे व वंहा आपका स्वास्थ नरम होगया व संवत 2002 की चेत शुक्ला तीज को आप देवलोक पधारे! आपके आचार्य काल में जिन शासन की बहुत प्रभावना हुइ ।एसे महान सन्त की 149 वी जन्म जयन्ती के पावन प्रसंग पर अनेकानेक वंदन ।

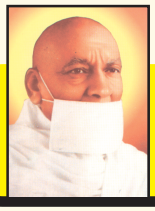

## जैन दिवाकर सुविचार....

**कौडी लगे न टक्को और दया धर्म है पक्की ।।**



# उपाध्याय प्रवर, स्वहृदय कवि, प्रसिद्धवक्ता, वाणी भूषण, धर्म भूषण, समय के प्रहरी, शताब्दी नायक पूज्य श्री मूलचंद जी महाराज साहब कोटिश वंदन, नमन

संकलन/प्रस्तुति - सुरेन्द्र मारू, इंदौर मो. 98260 26001

म्हारो नाम मूलियो ने मुं भूलियो
वो ऐसे थे फरिश्ते, खुद तन भी कष्ट झेले।
सब को दिखाएं रस्ते, वो ऐसे थे फरिश्ते।।
थी धन्य माता ऐसी, और धन्य थे पिता वो।
दिया ऐसा फूल जिस पर, नाज है गुलिस्तां को।।
सदियों तक जमाना, उनका ही नाम लेगा।
वो ऐसे थे फरिश्ते, खुद तन भी कष्ट झेले।।
जय हो, जय हो, जय हो, गुरु की मूल गुरु की।
जय हो, जय हो, जय हो, गुरु मूल मुनि की।।

उपाध्याय श्री मूलचंद जी महाराज साहब का जन्म - अश्विन शुक्ल पंचमी संवत 1979 पाली, मारवाड़ ( राज. ) में पिताश्री सेठ श्री बस्तीमलजी गादिया के घर आंगन एवं मातुश्री श्रीमती भीखी बाई की रत्न कुक्षी से हुआ। बालक का नाम *मूलचंद* रखा गया। बालक धीरे धीरे बड़ा होने लगा। विधि के विधान देखिए का अचानक जब आपकी आयु मात्र 9 वर्ष की थी तब आपकी मातुश्री श्रीमती भीखी बाई तथा कुछ ही अंतराल में आपके भाई-बहन का स्वर्गवास हो गया। बालक मूलचंद कुछ समझपाता की तीन वर्ष पश्चात ही आपके पिताश्री का भी स्वर्गवास हो गया। बालक मूलचंद पर यह भयंकर वज्रपात था। मासूम, मायूस बचपन ने इस कुठाराघात को कैसे सहन किया होगा ? इसकी कल्पना मात्र से दिल द्रवित हो जाता है।

अध्ययन के लिए 5 वर्ष तक आप गुरुकुल में भी रहे, जहां शिक्षा और संस्कृति के संस्कार पल्लवित हुए। अपने बचपन के मित्रों के बीच आप मूलिया नाम से प्रसिद्ध हो गए और बड़े ही मस्ती के अंदाज में आप कहा करते थे कि - *म्हारो नाम मूलियो ने मुं भूलियो * और सब मित्र जोर से ठहाका लगाते।

पाली में मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज के व्याख्यान में श्री जैन दिवाकर जी महाराज रचित जम्बूकुमार चरित्र सुना तो सांसारिक क्रिया कलापों - भोगों से विरक्ति हो गई। विक्रम संवत 1997 का वर्षावास जैन दिवाकर जी महाराज का जोधपुर में था। उस वर्षावास में श्री मूलचंद जी सहित पांच किशोर जैन दिवाकरजी म. के दर्शनार्थ गए।वहां जैन दिवाकरजी म. ने सहज ही उनसे पूछा --*दीक्षा कौन लेगा ?* मूलचंदजी ने तुरंत स्वीकृति सूचक हाथ खड़ा कर दिया। 17 वर्ष की यौवनावस्था में मूलचंद जी ने विक्रम संवत 1997 फाल्गुन कृष्ण पंचमी को समदड़ी ( मारवाड़ ) राजस्थान में जैन दिवाकर जी महाराज से भागवती दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा के 2 वर्ष पश्चात आपने प्रति रविवार आयम्बिल तप की आराधना शुरू कर दी करीब 79 वर्षों से आपकी यह मंगल तप आराधना अनवरत जारी रही जो एक कीर्तिमान है।

श्री जैन दिवाकर जी महाराज के सानिध्य में श्री मूल मुनि जी 10 वर्ष तक रहे और उनकी चरण सेवा में रहते हुए उनसे जीवन, जगत और साधना के बारे में अनेकानेक बातें सीखी।

उपाध्याय, करुणा के सागर, ज्योतिषाचार्य पूज्य श्री कस्तूरचंदजी महाराज के सानिध्य में 14 वर्ष तक रहे और उनके साथ मुनि श्री ने निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के कई प्रकार के कष्टों का अनुभव किया। श्री मूलचंद जी महाराज का कहना था कि- श्री कस्तूरचंदजी महाराज ने उनमें करुणा के विशेष भाव भरे। अपने से छोटों को सम्मान देना भी उन्होंने उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी महाराज साहब से सीखा।

इसी तरह पूज्य आचार्य श्री श्रीलाल जी म., पूज्य आचार्य श्री मन्नालालजी म., पूज्य आचार्य श्री खूबचंद जी म., पूज्य आचार्य श्री शेषमलजी म., पूज्य आचार्य श्री आत्मारामजी म., ( शेष पेज नं. ३१ पर )

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

# गुरुदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

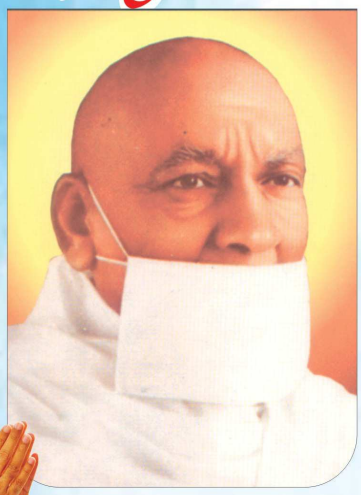

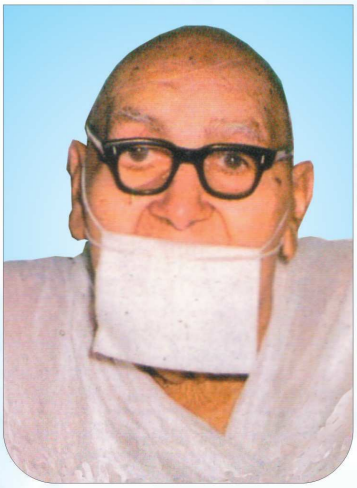

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

श्री जैन दिवाकर पावन तीर्थ एवं शोध संस्थान
वल्लभवाड़ी कोटा अतिशय क्षेत्र

## हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

वीरेन्द्र धाकड़
पूर्व महामंत्री
अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति

सौ. शंकुतला धाकड़
गौतम
अ.सौ.खुशी धाकड़
हर्ष
अ.सौ. मनीषा धाकड़
अपूर्व, सम्यक धाकड़

एवं समस्त धाकड़ परिवार, इंदौर

॥ महावीरराय नमः:॥ ॥ गुरूदेवाय नमः ॥

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा.की जयंती पर शत् शत् नमन

## पाली नंदन कोटा वंदन उपाध्याय मूलचंदजी म.सा. को नमन

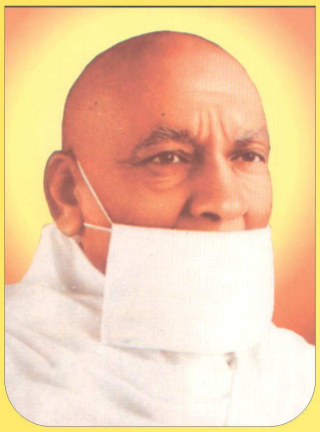
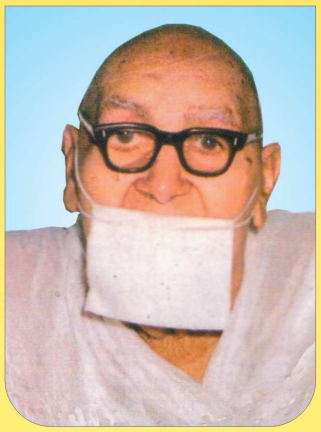

## 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

पर समस्त गुरूभक्तों का

## हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

**नेमीचंद चौपडा**

पुर्व रा.अध्यक्ष-अ.भा.श्वे.स्था. जैन कांफ्रेंस, नईदिल्ली

**नेमीचंद चौपडा परिवार, ग्रीन पार्क, पाली (राज.)**

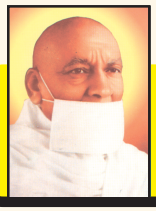

## जैन दिवाकर सुविचार....

**खबर नहीं या जग में पल की, सुकृत कर ले**
**प्रभु सुमर ले, कुण जाने कल की ।।**



# उपाध्याय प्रवर , स्वहृदय कवि,.....

( पेज नं. ३१ का शेष आलेख ) पूज्य आचार्य श्री आनंद ऋषिजी म., पूज्य आचार्य श्री देवेंद्र मुनि जी म., पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. के मार्ग दर्शन में जिनशासन की शान बढ़ाने का कार्य किया इतने आचार्यों के साथ कार्य करने का भी एक कीर्तिमान बनाया। वे चलते फिरते पुस्तकालय थे ।सैकड़ों वर्षों में ऐसे शताब्दी पुरुष होते हैं।

आप के प्रवचन अत्यंत ही प्रेरणास्पद प्रभावी सरल सहज एवं गहरे भाव लिए होते थे। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा की प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का यह प्रशिष्य भी *प्रसिद्धवक्ता* और *वाणी - भूषण* के रूप में प्रतिष्ठित था। आपके प्रवचनो में साहित्य के नवरस विद्यमान होते थे, हर विषय का समावेश उनमें रहता था। आपके प्रवचनो में विशेष रूप से मानवता, एकता, प्रेम, करुणा, स्वाध्याय, शील, क्षमा समता इत्यादि पर विशेष जोर रहता था। आप कहा करते थे कि- हमें एकता का श्री गणेश अपने परिवार से करना चाहिए। प्रेम से मिलजुल कर रहे हैं। अप्रिय एवं आवेशपूर्ण भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

उपाध्याय श्री मूलचंद जी महाराज साहब गद्य तथा पद्य के अच्छे रचनाकार थे। दो दर्जन से भी अधिक आपकी साहित्यिक कृतियां रही है ,जो आपके साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण है। आपके द्वारा रचित चरित काव्य भी वर्षावास के दौरान संत- सतियों के द्वारा धारावाहिक रूप से व्याख्यान में पढ़े व सुनाए जाते हैं। आचार्य श्री देवेंद्र मुनि जी के शब्दों में- मुनि प्रवर श्री मूल मुनि जी की कविता में अपूर्व लालित्य है। आप प्राकृत हिंदी राजस्थानी मराठी आदि कई भाषाओं के ज्ञाता रहे एवम जैन आगम एवं जैनेतर धर्म-दर्शन का अध्ययन किया।

मूलचंद जी महाराज साहब ने संघ में कभी भी पद प्राप्ति की चाह नहीं की। सन 1994 में आपका श्रमण संघ में उपाध्याय पद पर नियुक्ति का प्रश्न आया तो आपने स्पष्ट इंकार कर दिया। किंतु आपकी विद्वता और प्रभावकता को देखते हुए प्रवर्तक श्री रूपचंदजी म. सा. रजत की सलाह से आचार्य श्री देवेंद्र मुनि जी * ने आपको श्रमण संघ के उपाध्याय पद पर नियुक्त किया। श्रीसंघ केकड़ी ( अजमेर ) राजस्थान ने मुनि श्री को धर्म भूषण के विरद से तथा सन् 2004 में उदयपुर वर्षावास में *वर्धमान श्रावक संघ, श्राविका संघ, और युवक परिषद की ओर से एक विशाल समारोह में *राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचंद जी कटारिया * ने *समय के प्रहरी जैसे अर्थ पूर्ण अलंकरण से विभूषित कर अभिनंदन किया था। आपके दीक्षा गुरु मनोहर व्याख्यानी प्रवर्तक श्री वृद्धि चंद जी महाराज साहब थे।

विविध विधाओं में विरचित उपाध्याय श्री मूलचंदजी महाराज का साहित्य

काव्य चरित्र-

समरादित्य चरित्र, कुवलयमाला चरित्र, व्यवहारी रतनकुमार चरित्र, अजापुत्र चरित्र, अभयरुचि-अभयमति चरित्र, वीर अम्बड़ चरित्र, कयवन्ना चरित्र, उदायन चरित्र - 1, महाबल- मलियासुंदरी चरित्र, कनक सुंदरी चरित्र, उदयन चरित्र - 2 भगवान शांतिनाथ चरित्र, विक्रम चरित्र।

पद्य - अपना खेल - अपनी मुक्ति।

गीत- पथिक के गीत, विमल गीतांजली

गद्य - हमें लखा नहीं कोय ( विविध सत्य घटनाओं का विश्लेषणात्मक संकलन )

81वर्ष का विशाल संयम जीवन का भी आप कीर्तिमान बना गए और 26 सितंबर 2021 को संथारे के साथ आप इस संसार को छोड़ दूसरे भव की यात्रा की और अग्रसर हो गए ।आप जहां भी रहे आपकी कृपा जिनशासन और उसके भक्तों पर अनवरत बरसती रहे,बरसती रहे,.....

## गुरू जैन दिवाकरजी म. सा. ऐसे थे

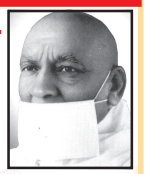

( मन्दाक्रान्ता )

भाषा काव्य सुकृति कविता,
कर्म व्याख्यान सिद्धिः।
विद्यापेक्षी पर हित सदा,
योगमाया प्रसिद्ध ।।
भक्तों के हैं प्रियवर महा,
ज्ञानध्यानादिदाता।
नियानन्दी सुकृत सुखभरे,
प्राणदाता विधाता ।।
भाषावक्ता विविध सरस-
ग्रन्थ निर्माण संत।
शान्तो दान्तो प्रकृति विशद
ध्यान लाभे सुपंथ ।।
आते जाते नृपगण
भूपति देखमाने।
वे थे ऐसे अतुल गरिमा
ज्ञान ज्ञाता सयाने ।।

**–मुनि रूपचन्द्र 'रजत'**

### जन्मशताब्दि वर्षेऽस्मिन्

शताब्दं पूर्वे जातः संतः चौथमलः कविः।
हीरालालो गुरुर्यस्य तस्य शिष्यः धीमतिः।
गुरुप्रसादाच्च नभौ नूनं ख्यातनामो जनकविः।
अर्जिता उपाधयस्तेन प्रसिद्धवक्ता जैनदिवाकरः ।।
जन्मशताब्दि वर्षोऽयं प्राप्तं भाग्योदयेन तु।
बहुविधा आयोजनाः कृताः
भक्तैः नगरे नगरेऽपि च ।।
रंकाश्च नरेशाश्च जैनेतरा जनता तथा।
धर्म प्रवचनैर्येन आकर्षिता बहुसंख्यकाः ।।
आशातीता भवत्तपस्या
जन्मशताब्दि वर्षेऽस्मिन्।
चतुर्विधसंघेन चिरस्मरणीयं
कृतं दिवाकर स्मृतिः ।।
श्रमणत्वं पालितं येन
शुद्धभावेन जीवने।
कृतार्थं येन कृतं जन्म
तस्मै नमः जैन दिवाकराय ।।

**–नन्दलाल मारू**

## जैन दिवाकर सुविचार....

**बड़ो बड़ाई ना करें, बड़ो न बोले बोल**
**हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारो मोल ।।**



# मुनि कमलेश की प्रेरणा से 5 नई गौशाला मंदसौर जिले में प्रारंभ

जैन दिवाकर श्रमण संघीय क्रांतिकारी राष्ट्रसंत कमल मुनि कमलेश आदि ठाणा 5 का मंदसौर चातुर्मास आध्यात्मिक साधना से तप त्याग के साथ परिपूर्ण जिसमें तपस्वी घनश्याम मुनि जी एवं अक्षत मुनि जी ने 33 उपवास सहित छह मास खमण हो गए 21 अट्ठारह 15 अट्ठारह की तो गिनती ही नहीं मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री परम गुरु भक्त श्री शिवराज सिंह जी चौहान ने मुनि कमलेश के विचारों से प्रभावित होकर प्रशासन को निर्देश दिया है हर ग्राम पंचायत पर गौशाला प्रारंभ की जाए जिसके अंतर्गत अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच ने दिल्ली मंदसौर सिंदफन में 5 बीघा के अंदर जैन दिवाकर कमल गोशाला प्रारंभ हुई गाय भी आ गई है जिला कलेक्टर श्री गौतम सिंह जी ने आकोदड़ा में 100 बीघा नगरी में 9 बीघा रेवास देवड़ा में 70 बीघा सीतामऊ में 100 बीघा जमीन प्रदान करके अभूतपूर्व इतिहास बनाया विधायक यशपाल सिंह जी ने रू. 500000 सिंध फन गौशाला के प्रदान किए चारों महीने नवकार महामंत्र के 12 घंटे के जापके कलश की प्रभावना से तेरा लाख की राशि एकत्रित हुई कुल 40 दानदाता प्रदान किए आनंद केवल जयंती पर साप्ताहिक प्रोग्राम हुए ।

रक्षाबंधन मरुधर केसरी जयंती जुगाड़ भूषण गुरुदेवप्रताप जी मा साहब की पुण्यतिथि पर जिला जेल गौशाला अनाथ आश्रम पुलिस प्रशासनएकासना सामायिक दिवस मैं मनाई गई 15 अगस्त को प्रशासन की ओर से हजारों जनता ने तिरंगा यात्रा मुनि कमलेश के नेतृत्व में निकाली गई शहर की 25 स्थान मिलकर शहर के बीच सेस्थान पर दारु मीट अंडे शराब की दुकान हटाने की मांग करते हुए कहा पशुपतिनाथ की पावन नगरी जिसको सरकार ने पवित्र नगर घोषित किया है या तो नाम हटाए अथवा काम करें ।

मंदसौर की इतिहास में प्रथम बार दिगंबर संत धर्म भूषण जी मुनि कमलेश के सानिध्य में 18 दिवसीय पर्यूषण पर्व मनाए मूर्तिपूजक आचार्य यशोदे विजय जी के 75 दीक्षा दिवस पर अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली द्वारा उन्हें आध्यात्मिक सूर्य से अलंकृत किया गया और प्रश्नपत्र 10 लाख की राशि गौशाला हेतु एकत्रित हुई जिला अधीक्षक अनुराग जी ने भू माफियाओं से गोचर भूमि मुक्त कराकर आदर्श प्रस्तुत किया मध्य प्रदेश के सभी जिलों में एलसीडी भेंट की गई कारागृह के स्थान पर सुधार ग्रह आरके दीनबंधु के स्थान पर प्रेमी बंधु सभी जिलों में पुस्तकालय गौशाला का प्रस्ताव पास किया गया ।

प्रशासन की ओर से इमाम फादर ग्रंथि महंत सभी धर्म गुरु ने सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जेल में शुद्ध पेयजल के लिए अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच ने रू. 25000 की राशि प्रदान की बौहरा मुस्लिम समाज की भव्य चल समारोह में राष्ट्रसंत का आशीर्वाद उन्होंने प्राप्त किया जन्माष्टमी रामनवमी परशुराम जयंती स्कूल कॉलेज पोलिस अदालत सभी स्थानों पर मुनि कमलेश के क्रांतिकारी प्रवचन का आयोजन हुआ मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा चर्च यदि आपकी वाणी गूंज उठी सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर राष्ट्रीय एकता और अखंडता की शपथ सभी धार्मिक सामाजिक राजनीतिक संगठनों ने मुनि कमलेश के सानिध्य में ली जैन दिवाकर गुरुदेव चौथमल जी मार साहब की जयंती एवं मालवरत्नउपाध्याय गुरुदेव श्री कस्तूर जी महाराज साहब की दीक्षा जयंती अष्ट दिवसीय रूप में मनाई जा रही है गीता भवन गुरुद्वारा जेल पुलिस लाइन सभी स्थानों पर दिवाकर जयंती एवं गुरु नानक जयंती भव्य रूप में मनाई जा रही है दिवाकर मंच मध्य प्रदेश के संयोजक परम गुरु भक्त दिवाकर के लाडले श्री अनिल जी संचेती के आकस्मिक निधन पर पूरी मानव समाज भारी वज्रपात लगा श्रद्धांजलि सभा में मुनि कमलेश ने सरकार से अनिल संचेती चौराया नाम करने का प्रस्ताव रखा प्रशासन ने तत्काल स्वीकार कर लिया ।

देश के कोने कोने से दर्शनार्थी का ताता लगा रहा परिषद के 8 दिन प्रवचन में आने वाले सभी जनता के लिए गौतम प्रसादी का आयोजन किया गया सकल जैन समाज की ओर से प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया 40 विद्यार्थियों को सम्मानित किया ।

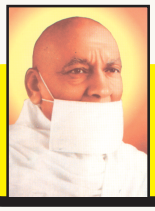

## जैन दिवाकर सुविचार....

**दो हजार एक साल में , आया शहर इंदौर ।**
**चौथमल चेतावे जग को, प्रभु नाम सिरमौर ।।**



### दिवाकरोऽयम्

दिव्याकरो द्युतियुतोऽपि
दिवाकरोऽयम् ।
भव्याकरो विजित ज्ञान,
निशाकरोऽयम् ।।
शिक्षा करो हिमविचार
सुधाकरो यम् ।
विद्याधरो नरवरोऽपि
दिवाकरोऽयम् ।।

सिद्धायुधो सुसफलो
मुदितो महात्मा ।
चैतन्य शक्तिरपरो,
महितोशुभात्मा ।।
व्याख्यानरीति कुशलो,
नृपराज सेतुः ।
पारं करोति सकलान्
निजधर्मकेतुः ।।

गम्भीर भाव भवनो
भुवने न कोऽपि ।
विद्या विवाद मतिमान्
मतिमान् न कोऽपि ।।
वाणी विचित्र मधुरः,
सुभगो मुनीशः ।
दिव्याननो विनय भावमुदा मुनीशाः ।

व्याख्यान ज्ञान जगता–
मधिकार स्वामी ।
व्याख्यान कोश परितोष
सुधारनामी ।।
दिव्याकरो रुचिकरोऽत्र
चतुर्थमल्ल ।
सत्यार्थ ध्यान चरितार्थ
विकासमल्ल ।।

–श्रीधर शास्त्री

# जैन दिवाकर गुरुदेव चौथ मल जी म. सा. करिश्माई महान संत शिरोमणि थे

जैन दिवाकर गुरुदेव चौथ मल जी म. सा. करिश्माई महान संत शिरोमणि थे. एक संस्मरण हमारे पूज्य पिताजी स्व. सेठ श्री पन्ना लाल जी कोठारी बताते थे. बात आजादी मिलने से कुछ वर्ष पहले की है. पिताजी इंटर का प्रायवेट एक्साम देने पंजाब जा रहे थे ट्रैन द्वारा. साथ मे उनके प्राइवेट अध्यापक स्व.श्री सूरज करण जी भी थे ।

स्व. सेठ श्री पन्नालाल जी कोठारी, ब्यावर

उन दिनों हिन्दू मुस्लिम दंगे शुरू हो गए. एक स्टेशन पर भयंकर मार काट होने लगी. मुस्लिमो द्वारा हिन्दुओं को पकड़ पकड़ कर तलवारों से काटा जाने लगा. हर तरफ खून ही खून और लाशें दिखाई देने लगी. ऐसी विषम परिस्थिति मे पिताजी ने गुरुदेव चौथ मल जी म. सा. का स्मरण किया और उनके ध्यान मे लीन हो गए.फिर मानो चमत्कार हो गया. पिताजी को वहां घट रहा खूनी मंजर दिखना बंद हो गया सिर्फ गुरुदेव दिख रहे थे. खून खराबा जारी था लेकिन पिताजी और मास्टर सा. का बाल भी बांका नहीं हुआ। रतलाम की प्रॉपर्टी 18 -12 -1926 को खरीदी और दिं. 29-4 -1980 को समाज को सामाजिक कार्य हेतु दी ,उस वक्त चेयरमैन श्रीमान पन्नालाल जी साहब कोठारी ,ट्रस्टी श्रीमान सोहन लाल जी कोठारी वे श्रीमान अमरचंद जी कोठारी थे । उस वक्त रायबहादुर सेठ कुंदनमलजी कोठारी ट्रस्ट ब्यावर जयपुर ने नाम से ट्रस्ट का गठन किया गया था । यह भवन रतलाम चौमुखीपुल स्थित दिवाकर जी म.सा. पर प्रकाशन साहित्य हेतु गुरूदेव की प्रेरणा से दिया था । आज रतलाम समाज को देने के बाद वहां पर महिला स्थानक के नाम पर चौमुखीपुल रतलाम पर स्थित है । ऐसे थे हमारे जैन दिवाकर गुरुदेव चौथ मल जी म. सा. शत शत नमन.

तेजस पन्नालाल कोठारी
ब्यावर वाले, जयपुर

शताब्दी नायक उपाध्याय पूज्य गुरूदेव जैन दिवाकर जीम.सा. के शिष्य श्री मूलचंदजी म.सा. से आशीर्वाद लेते हुए तेजस पन्नालाल जी कोठारी जयपुर।

गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.
एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा.
की जयंती पर

# शत् शत् नमन

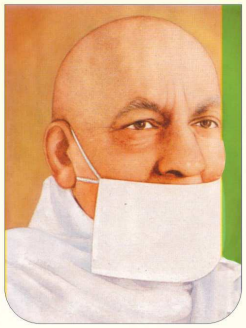

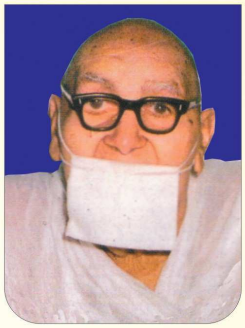

सेठ पन्नालाल कोठारी

तेजस पन्नालालजी कोठारी
कोठारी परिवार
ब्यावर, जयपुर

पू. गुरूदेव उपाध्याय मुलचंदजी म.सा.से आशीर्वाद
स्वरूप यंत्र लेते हुए श्री तेजस कोठारी

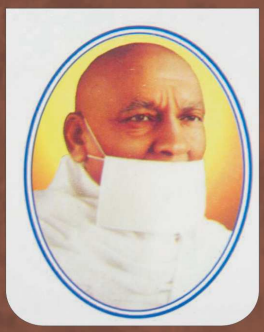

जैन दिवाकर पूज्य
श्री चौथमलजी म.सा.

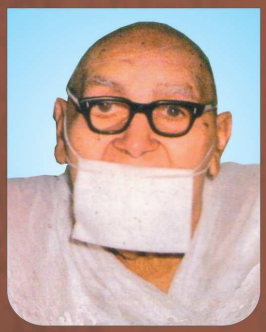

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

श्रमणसंघीय महामंत्री तप.
श्री मोहनमुनिजी म.सा.

गुरूदेव जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.
एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा
की जयंती पर

# शत् शत् नमन

समाजसेवी श्री हनुमानप्रसाद जी जैन (पोरवाल)
को जैन दिवाकर गुरू मोहन 16 वां
राष्ट्रीय अवार्ड से महावीर भवन स्थानक
इमली बाजार, इन्दौर पर सम्मानीत किया गया

समाजसेवी श्री हनुमानप्रसाद जी जैन
महेन्द्र सेव वाला परिवार इन्दौर (म.प्र.)

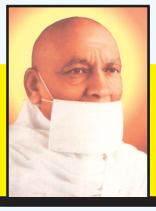

## जैन दिवाकर सुविचार....

*वाजिरात गजरात मही औ, महल कोष धन दारा।*
*चेतन से हो अभिन्न, तो कभी न होवे न्यारा।।*



# कोटा ( राज. ) में जैन दिवाकरजी म.सा. का अंतिम चार्तुमास सन् 1950 विक्रम 2007

बाबू हरबंसलाल जी जैन, संयोजक कोटा चातुर्मास

कोटा, जैन दिवाकर जी का अंतिम चातुर्मास, सन 1950 त्रिवेणी संगम का नजारा देखने पधारे, कॉटन किंग, माननीय सेठ साहब श्री हुकम चंद जी भंडारी, इंदौर भगवान महावीर के अनुयाई, अहिंसा धर्म के प्रवक्ता, पतितोद्धारक, एवं समाज सुधारक, प्रातः स्मरणीय अनंत श्री विभूषित जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी महाराज साहब जिनकी की जन्म जयंती का 145 वां पुण्य पावन प्रसंग है ।

जन्म कार्तिक शुक्ला 13 विक्रम संवत 1934, सन 1877, नीमच ( म.प्र. ) एकता एवं अखंडता का शंखनाद मुनि श्री ने सर्वप्रथम 1950 के अपने अंतिम वर्षावास के दौरान, कोटा नगर में आयोजित प्रथम त्रिवेणी सम्मेलन के अवसर पर जैन दिगंबर आचार्य श्री सूर्य सागर जी महाराज एवं श्वेतांबर मंदिर मार्गी समाज से आचार्य आनंद सागर जी महाराज के सानिध्य में हर रविवार को सम्मिलित प्रवचन हुआ करते थे। उस समय का यह फोटोग्राफ है जिसमें तीनों संप्रदायों के महान संत पाट पर विराजित नजर आ रहे हैं। इस चातुर्मास के संयोजक एवं समाज के मंत्री बाबू हरबंस लाल जैन गुरुदेव के पाट के पास खड़े हुए दिखाई नजर आ रहे हैं। देश के प्रमुख उद्योगपति, कॉटन किंग, भंडारी मिल इंदौर, के मालिक सेठ हुकम चंद जी भंडारी अपने उदगार प्रकट कर रहे हैं और हजारों की संख्या में शहर के प्रबुद्ध नागरिक एवं 36 कोम के अनुयायियों द्वारा प्रवचन का लाभ लिया जा रहा हैं।

प्रेषक - सुधीर हरबंस लाल जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री ऑल इंडिया एस एस जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली, कोटा 1 नवंबर 2022

कोटा में श्वेताम्बर - दिगंबर आचार्य के साथ प्रवचन करते हुए. श्री जैन दिवाकर जी म.सा.

गुरूदेव की सभा में काटन किंग भंडारी मिल इंदौर के मालिक श्री हुकुमचंद भंडारी ( सेठ ) अपने विचार व्यक्त करते हुए।

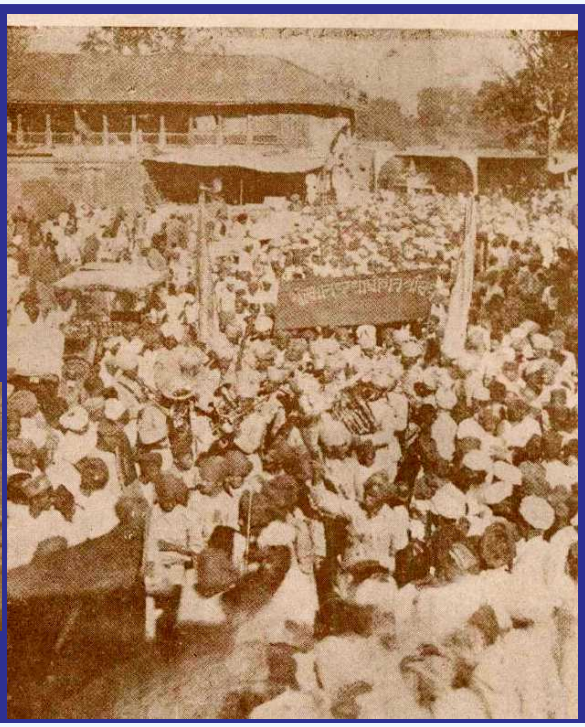

और यह है अंतिम महायात्रा का दृश्य ( वि.स. २००७ कोटा) हजारो शोकाकुल नर-नारी गुरूदेव जैन दिवाकर जी की अंतिम यात्रा (श्मशान यात्रा) में बैकुण्ठी के साथ चल रहे है ।

## जैन दिवाकर सुविचार....

**काम क्रोध मद लोभ जबर, ये शक्तिचशाली चोर।**
**सावधान होकर रहना चले न इनका जोर।**



# रामरहिम नगर रतलाम स्थित जैन दिवाकर श्री कमलमुनि कमलेश विद्यालय पर पधारे जैन दिवाकरीय गुरूदेव शिवाचार्य श्रीजी

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट ध्यानयोगी पू.डॉ. शिवमुनिजी म.सा., राष्ट्रसंत श्री कमलमुनिजी म.सा. कमलेश, अभिग्रहधारी तपस्वी पू. श्री राजेश मुनिजी म., पू. श्री घनश्याम मुनि जी म.सा. आदि गुरू भगंवतों के साथ रतलाम से इंदौर विहार के दौरान रतलाम नगर की दलित पिछड़ी गरीब बस्ती राम रहिम नगर पर प्रात: ७.३० बजे पधारे । जहा विद्यालय संचालन समिति अध्यक्ष सर्वश्री मोतीलाल बाफना, नवीन श्रीमाल, सुनील पटवा, जितेन्द्र पटवा, सुरेन्द्र भटेवरा, निलेश बाफना, पारसमल पुगंलिया, स्कूल प्राचार्य, श्रीमती सरिता राठौड़, श्री नरेन्द्रसिंह चावड़ा आदि श्रावकों ने भव्य अगवानी की । आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने स्कूल भवन का निरीक्षण करते हुए शिक्षा, सेवा के कार्यो की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहाकि छोटे-छोटे बच्चों के व्यक्तित्व एवं ज्ञान विकास हेतु एक पीरियड ध्यान-साधना करवाकर उनकी उन्नति की दिशा में सेवा कार्य करें । जिससे समाज एवं राष्ट्र विकास हेतु कार्य हो सके । राष्ट्रसंत ने राजगिरी (बिहार) में ऐसा ही शिक्षा सेवा प्रकल्प अखिल भारतीय जैन दिवाकर विकास मंच द्वारा संचालित कर दलित मानव की सेवा कार्यो से आचार्य भगवंत को अवगत कराया । आचार्य भगवंत ने बाफना परिवार नीमचौक को मंगल कामना का शुभाशीष देते हुए मंगल पाठ सुनाया । राष्ट्रीय महामंत्री श्री रमेश भण्डारी जैन विचार प्रस्तुत किए। आभार निलेश बाफना द्वारा किया गया ।

## कमलमुनि कमलेश विद्यालय की झलकियाँ

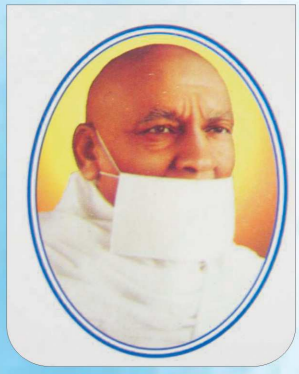

जैन दिवाकर पूज्य
श्री चौथमलजी म.सा.

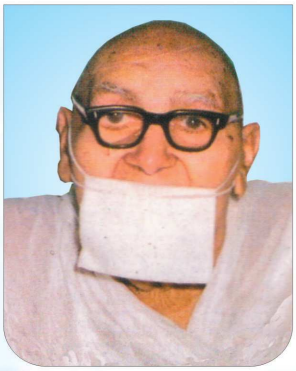

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

श्रमणसंघीय महामंत्री तप.
श्री मोहनमुनिजी म.सा.

## ललित पटवा

नवनिर्वाचित अध्यक्ष
श्री वर्धमान स्था.जैन श्रावक संघ, नीमचौक रतलाम

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

पर समस्त गुरूभक्तों का

## हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

**पटवा परिवार, रतलाम**

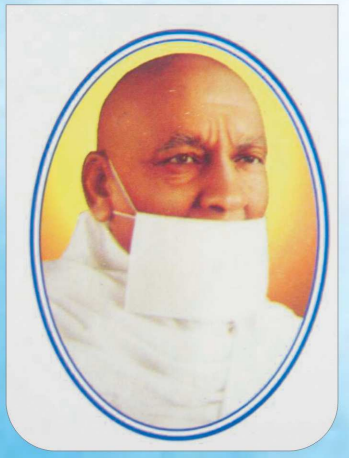

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

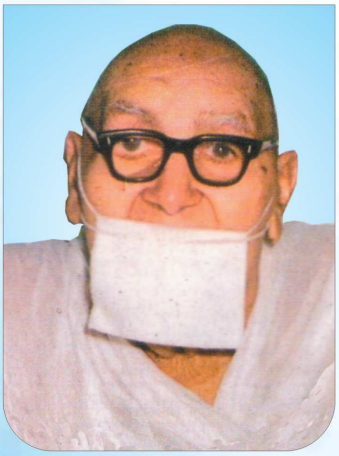

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

## गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा .की जयंती पर शत् शत् नमन

## सुरेन्द्र मारू

54 सी, वैभव नगर एक्सटेंशन, कनाडिया रोड, इन्दौर (म.प्र.)

# गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा.की जयंती पर शत् शत् नमन

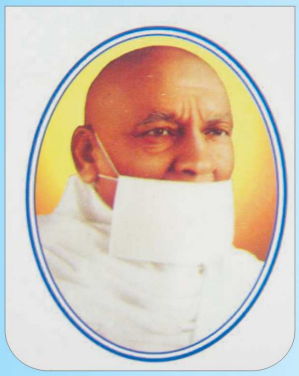

जैन दिवाकर पूज्य
श्री चौथमलजी म.सा.

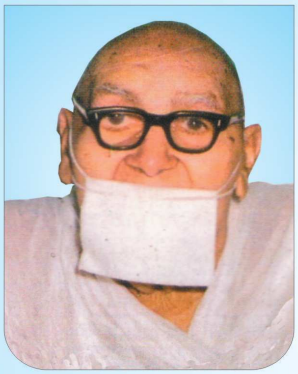

परम पूज्य उपाध्याय
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

**राजकुमार दांणी (डुंगलावाला)**
डुंगला, उदयपुर (राज.) मो.9468704541


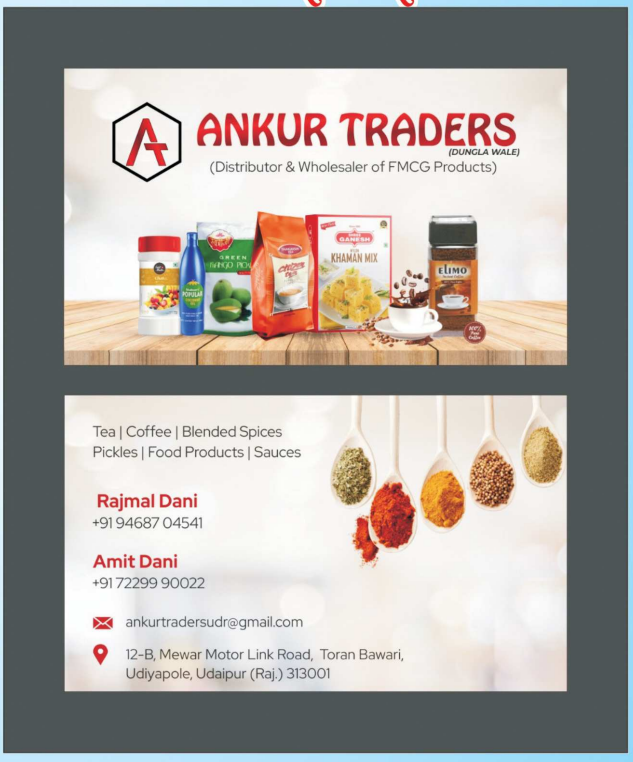



## 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती पर समस्त गुरूभक्तों का हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

महावीर डांगी जावरा

**सज्जन टायर**
944, सरकारी अस्पताल रोड, जावरा (म.प्र.)
फोन. 07414-22265
मो. 7898222265, 9770022265


## गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा की जयंती पर

# शत् शत् नमन

**प्रदीप चत्तर**
तिलक नगर, इन्दौर (म.प्र.) मो. 9827245797

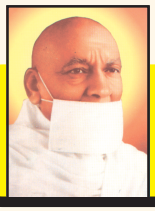

## जैन दिवाकर सुविचार....

**सोता सदा रहै अज्ञानी, सदा जागता रहता ज्ञानी ।**
**जागे जिसका धन बच जावै, सोवे जिसका सर्वस्व जावे ।।**



### श्री जैनदिवाकराष्टकम्

लेखक—नन्दलालजी मारू, इन्दौर

अस्मिन्कलौ दुष्करमस्ति त्यागो श्रियश्च प्रेमास्पदानां पितॄणाम् ।
मुमुक्षुणा चौथमलेन सर्वाः वैराग्य भावेन युतेन त्यक्ताः ॥ १ ॥
अहिंसातपो ब्रह्मचर्यादियुक्तं गुरुप्रसादाच्च निशम्य धर्मम् ।
मत्वा जगज्जालमजालयुक्तमात्मोद्धरत्यर्थाय बभूव साधुः ॥ २ ॥
'मुंडे भविता' कृताऽशेषसेवा गुरोर्वचोभिर्मनसा च कायया ।
तुष्टो गुरुराशिषमाददौ यत्प्रसरोतु कीर्तिस्तव दिग्दिगन्तरे ॥ ३ ॥
पाथेयमाशीर्वचनं गुरूणाम् स गृह्णमानो विचचार देशान् ।
उमरावराजांश्च राज्ञः कियन्तान् धर्मोपदेशेन वशांचकार ॥ ४ ॥
धर्माभिमुखमभूवन्नराधिपास्ते गुरुवाक्शिक्षायां समर्दांश्च चेक्रिरे ।
धर्मस्य पर्वेषु दिनेषु, हिंसानिवृत्तिलेखाः यस्मिन्लिखिताः ॥ ५ ॥
वयस्यविरता भुविना तु प्राप्ता हीरकजयंतिः समयोऽस्य जाता ।
दीक्षा शताब्दपर्यंतपालिता स्वर्णोत्सवो यस्य विधीयते च ॥ ६ ॥
विरलाः श्रमणत्वममीप्स्यन्ति विरलाः गृहीत्वा परिपालयन्ति ।
विरलाः निजानीह महोत्सवानि हीरकसुवर्णानि विलोकयन्ति ॥ ७ ॥
उपाध्यायः जैन दिवाकरश्च प्रसिद्धवक्ता जनवल्लभश्च ।
सार्थाः प्रवृत्ता जनतासमूहैस्तस्मै वयं चाभिनन्दामहे च ॥ ८ ॥

श्रीचौथमलगुरोर्शुभे स्वर्णजयन्त्युत्सवे ।
नन्दलालमारुणाऽर्पितं दिवाकराष्टकम् ॥

### जन्मशताब्दि वर्षेऽस्मिन्

शताब्दं पूर्वे जातः संतः चौथमलः कविः ।
हीरालालो गुरुर्यस्य तस्य शिष्यः धीमतिः ।
गुरुप्रसादाच्च नभौ नूनं ख्यातनामो
जनकविः ।
अर्जिता उपाधयस्तेन प्रसिद्धवक्ता
जैनदिवाकरः ।।
जन्मशताब्दि वर्षोऽयं प्राप्तं भाग्योदयेन तु ।
बहुविधा आयोजनाः कृताः
भक्तैः नगरे नगरेऽपि च ।।
रंकाश्च नरेशाश्च जैनेतरा जनता तथा ।
धर्म प्रवचनैर्येन आकर्षिता बहुसंख्यकाः ।।
आशातीता भवत्तपस्या
जन्मशताब्दि वर्षेऽस्मिन् ।
चतुर्विधसंघेन चिरस्मरणीयं
कृतं दिवाकर स्मृतिः ।।
श्रमणत्वं पालितं येन
शुद्धभावेन जीवने ।
कृतार्थं येन कृतं जन्म
तस्मै नमः जैन दिवाकराय ।।

—नन्दलाल मारू

श्री दिवाकर अभिनंदन ग्रंथ में प्रकाशित रचना स्व श्री नन्दलाल जी मारू रामपुरा वाले, इंदौर ( सुरेन्द्र मारू इंदौर के बड़े पिताजी है।)

## ओ मेरे प्रभाकर, कहां हो मेरे जैन दिवाकर

तुम्हें देखा नहीं, पर श्रद्धा अपार।
तुम्हें जाना नहीं, पर पहचाना अपार।।1।।
तुम्हारे दर्श किए नहीं, पर तुम हो अपरंपार।
तुम्हारी महिमा मां से सुनी,जो हैअपरंपार।।2।।
तुम्हारा जीवन, जैसे नदिया की धार।
वाणी मिश्री सी, मधुर मीठी पुकार।।3।।
करके जग का उद्धार, कहां चले गए तारणहार।
आज फिर तुम्हारी, करता हूं पुकार बारंबार।।4।।
ओ मेरे जीवन आधार, आते हो याद बार- बार।
ओ मेरे प्रभाकर, कहां हो मेरे जैन दिवाकर ।।5।।

स्वरचित रचना - सुरेन्द्र मारू, इंदौर
+91 98260 26001

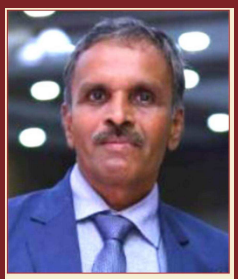



लेखक :- सुरेन्द्र मारू, इंदौर ( +91 98260 26001)

## जैन दिवाकर सुविचार....

*दृश्य - अदृश्य जो ज्ञेय पदार्थ, ज्ञाना अवश्य कहावे ।*
*तन इंद्री जो भोग है वस्तु, यू भुक्ता सिद्धा हो जावे ।।*



# रतलाम में गुरु जैन दिवाकर जी ने की थी श्रीसंघ एकता एवं गुरुभक्तों की एकता की मिसाल

**महेन्द्र बापूलालजी बोथरा (रतलाम)**

रतलाम में पुनः १९४९ में २५ वर्ष बाद गुरूदेव श्री जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता श्री चौथमलजी म.सा. का चातुर्मास करने की श्रीसंघ के श्रावकों में चर्चा होने लगी तब रतलाम संघ ३ संप्रदाय में बंटा हुआ था । पूज्य हुकमीचंदजी म.सा. का संघ २ भागों में था, १. पूज्य जवाहरलालजी म.सा., २. पूज्य मन्नालालजी म.सा.का था एवं पूज्य धर्मदासजी म.सा. का संघ अलग था । सभी आपसी बैठक में चर्चा कर चातुर्मास करवाने की सहमति बनी तब संघ का अध्यक्ष श्री नाथुलालजी सेठिया के मार्गदर्शन में चातुर्मास करवाने का तय कर उसमें पूज्य हुकमीचंदजी म.सा.का संघ २ भागों में विभाजित था ऐसी चर्चा सुनी है । श्रावकों ने सहयोग तय कर विनती पर गुरूदेव तब रतलाम में वर्ष १९४९ का चातुर्मास करने की घोषणा हुई । तब रतलाम संघ के श्रावक श्री नाथुलालजी सेठिया, बापुलालजी बोथरा, लक्ष्मीचंदजी मुणत, मांगीलालजी बोथरा, चांदमलजी चाणोदिया आदि अन्य प्रमुख थें । तब तीनों संप्रदाय के लोगों ने जोधपुर में प्रवेश में भव्य आगवानी की और ऐतिहासिक चातुर्मास संघ के श्रावकों, युवाओं के सहयोग से हुआ । जिसमें श्री मिश्रीमलजी मांगीलालजी कटारिया, धुलचंदजी ओरा, मांगीलालजी मारवाडी, कन्हैयालालजी पिरोदिया, हस्तीमलजी ओरा, इन्दरमलजी बोथरा, कांतिलालजी बाफना आदि कई युवा थे युवा का मंडल था तथा सभी सक्रिय थें । रतलाम चातुर्मास से गुरूदेव के भक्तों के संगठन की चर्चा चलती रही है । बैठकों में ब्यावर, उदयपुर, इन्दौर, जावरा, रतलाम, मंदसौर राजस्थान आदि कई राज्यों के गुरूभक्त समय-समय पर मिलते रहे संवत २००७ वर्ष १९५० का चातुर्मास कोटा ( राज. ) में हुआ, गुरूदेव के देवलोक के बाद वर्ष १९५१ में उपाध्याय पूज्य प्यारचंदजी म.सा. के निर्देशन में जैन दिवाकर गुरूदेव के नाम पर अ.भा.जैन दिवाकर संगठन समिती का गठन हुआ । संस्थापक अध्यक्ष के

रूप में सेठ फकीरचंदजी मेहता इन्दौर को बनाया गया । उसके बाद समय-समय पर श्री लक्ष्मीचंदजी तालेडा जयपुर, श्री पन्नालालजी कोठारी बैंगलोर, बाद मे श्री माणकलालजी तालेडा जयपुर राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। अभी वर्तमान में रतलाम बैठक में श्री शांतिलालजी मारू निम्बाहेडा बनाये गए ।

वर्ष १९५० में पूज्य गुरूदेव जैन दिवाकरजी के देवलोकगमन पश्चात रतलाम के प्रमुख श्रावकों ने जिसमें सर्व श्री बापुलालजी बोथरा, समरथमलजी कटारिया कलमोडा वाला, धुलचंदजी ओरा, मिश्रीमल जी कटारिया, कन्हैयालालजी पिरोदिया, तेजमलजी भंडारी, चांदमलजी चाणोदिया आदि की पहल पर बापुलालजी बोथरा ने प्रयास कर तत्कालीन मध्यभारत सरकार के स्वास्थ्यमंत्री रतलाम निवासी डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड के सहयोग से रतलाम के गुरूभक्तों की मांग पर मध्य भारत शासन ने गुरूदेव की स्मृति में सागोद रोड रेल्वे पुलिया के पास जमीन अलाट आदेश जारी रतलाम संघ के गुरूभक्तों को हुआ जो जैन दिवाकर स्मारक के नाम से देशभर में विख्यात हुआ । जहां पर आज उपाध्याय ज्योतिषाचार्य पूज्य कस्तूरचंदजी म.सा. एवं गुरूदेव के आज्ञाकारी श्रमणसंघीय महामंत्री तपस्वी मोहनमुनिजी म.सा. आदि का समाधी स्थल है । उनकी स्मृति में उसी स्थान पर पावन धाम बना हुआ है । इसी जमीन एक हिस्से में जैन दिवाकर हास्पिटल एवं रिसर्च सेंटर की स्थापना पूज्य तपस्वी मोहनमुनिजी म.सा. के निर्देशन में हुई थी । इस स्थान पर अभी वर्तमान जैन दिवाकर स्कूल एवं जैन दिवाकर गौशाला का संचालनभी नियमित हो रहा हैं । एवं अन्य निर्माण कार्य जारी हैं ।

## जैन दिवाकर सुविचार....

**पाव पलक की खबर नहीं करें काल की बात**
**ना जानु क्या होता है उगले ही परभात।**



# वरिष्ठ समाजसेवी, समाज रत्न, जैन दिवाकर के अनन्य भक्त स्व. श्री गजराजसिंह साहब झामड़

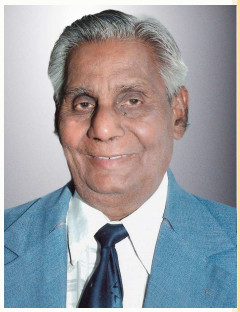

जैन दिवाकर के अनन्य भक्त, इंदौर नगर के श्री स्थानकवासी जैन समाज के दृढ़ स्तंभ, धर्म और सेवा के प्रति समर्पित, समाज रत्न, श्री जैन दिवाकर गुरु मोहन अवार्ड से सम्मानित वरिष्ठ श्रावक स्व. श्री गजराजसिंहजी सा. झामड़, जिन्होंने 22 वर्षों तक श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट, महावीर भवन, इंदौर के महा मंत्री पद पर रहते हुए अपनी सेवाएं दी। साधु संतों की सेवा आपका पवित्र जीवन धर्म रहा। जैन कांफ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना के माध्यम से शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में जरूरतमंद छात्रों एवम रोगियों के लिए सहयोग प्रदान कर कर्तव्य परायणता का परिचय दिया। जैन दिवाकर विशेषांक प्रकाशित होने पर उनकी याद बरबस आ ही जाती है।


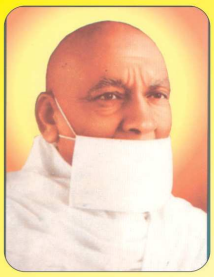

145 वीं जैन दिवाकर
जन्म जयंती एवं 117 वीं
कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती पर
नमन एवं समस्त गुरूभक्तों का

हार्दिक अभिनंदन एवं वंदन

R.K. Enterprises

Atul Jhamad, B.E.,M.B.A (DIRECTOR) MO. 94250-57993
565, M.G. ROAD, (DHENU MARKET) INDORE (M.P.)
PHONE : 4046169, 2435169
EMAIL : rkenterprises123@yahoo.co.in
website: www.rkenterprises.co.in

Distributor for :

Supreme® FURNITURE
crate, Plalers, Bins & Dust bin

Exclusiff™ seating systems

Mfg. Of All kinds of office/ institute furniture & under take interior turnkey projects

पूना चातुर्मास में उपाध्याय श्री प्यारचंदजी म.सा. के सानिध्य में गुरुभक्तों के सम्मेलन में अखिल भारतीय जैन दिवाकर संगठन समिति के गठन पर उपस्थित जैन दिवाकर गुरुभक्त

जैन दिवाकर जन्म शताब्दी महासमिति के कार्यकर्तागण ।

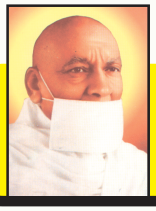

# जैन दिवाकर सुविचार....

**सोता–सोता क्या करो, सोता आवे नींद ।**
**मौत सिराने यों खड़ी, ज्यो तोरण आवे बींद ।**



## श्री जैन दिवाकरजी महाराज सा. के शिष्य-प्रशिष्य

## गुरूदेव के शरणों में तत्कालीन राजा–महाराजा

हिज हाईनेस महाराजा श्री दिलीपसिंह जी साहब बहादुर, सैलाना (मालवा)

रावत जी साहब श्री केशरीसिंह जी कानोड़ (मेवाड़)

श्रीमान रायबहादुर नहारसिंह जी साहब बेदला (मेवाड)

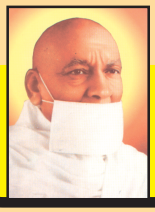

## जैन दिवाकर सुविचार....

**पूर्व जन्म का किया मिला, अब करो वहीं फिर पाओगे**
**जो गफलत के बीच रहे तो, मित्र ! बहुत पछताओगे ।**

अजमेर ( राज. ) में साधु सम्मेलन के वक्त उपाध्याय कस्तुरचंदजी म.सा. को द्वितीय आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी म.सा. वंदना करते हुए ।

नई दिल्ली में उपाध्याय केवलजी मुनि जी. म.सा. के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिराजी गाँधी एवं उपस्थित अतिथिगण ।

## गुरूदेव के शरणों में तत्कालीन राजा–महाराजा

खान साहब सेठ नजरअली अलावरूस मिल (उज्जैन) के मालिक सेठ लुकमान भाई (उज्जैन)

दानवीर रायबहादुर सेठ कुन्दनमलजी कोठारी आनरेरी मजिस्ट्रेट, ब्यावर

श्रीमान राजा साहब अमरसिंहजी बनेड़ा (मेवाड़)

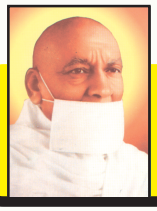

# जैन दिवाकर सुविचार....

**आना जो हुआ मेरा, फक्त उपदेश देने को ।**
**मोह की नींद छोड़ो, तिरो–तिरो यह कहना को ।**



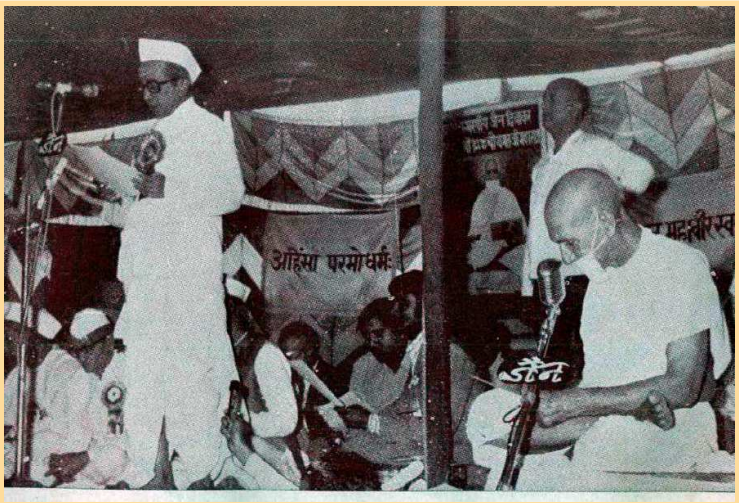


श्री जैन दिवाकर जन्म शताब्दी महोत्सव ( ५ नवंबर १९७८ दिल्ली में ) के अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जती गुरूदेव के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप उदघाटन भाषण देते हुए । पट्ट पर समारोह के प्रेरणासूत्र श्री केवलमुनिजी म.सा. ।

## गुरूदेव के शरणों में तत्कालीन महाराजा एवं अंग्रेज अफसर

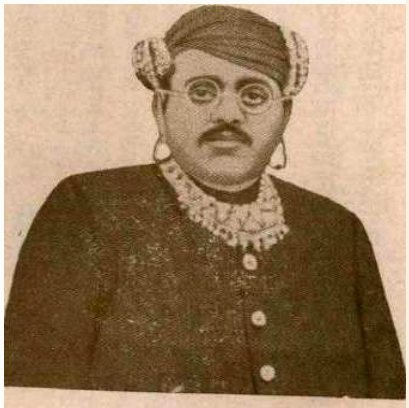

श्रीमान राजराणा यशवंतसिंह जी साहब देलवाड़ा (मेवाड़)

राजराणा श्रीमान दुलेहसिंहजी साहब बड़ी सादड़ी (मेवाड़)

जोधपुर से विहार करते जैन दिवाकर जी मसा - साथ मे भक्तो की भारी भीड

जैन दिवाकर जी म.सा. के सदुपदेशो से जैन धर्म का पालन करने लगे माड़लगढ़ राजस्थान के चर्मकार समाज के नागरिक ।

गुरुदेव के अंग्रेज भक्त मि. एफ. जी. टेलर नीमच कैंण्ट (मालवा)

जैन दिवाकर
श्री चौथमलजी म.सा.

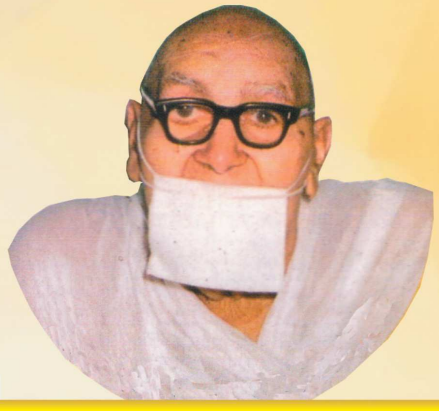

परम पूज्य उपाध्याय ज्योतिषाचार्य
श्री कस्तुरचंदजी म.सा.

डमण संघीय महामंत्री घोर तपस्वी
श्री मोहनमुनिजी म.सा.

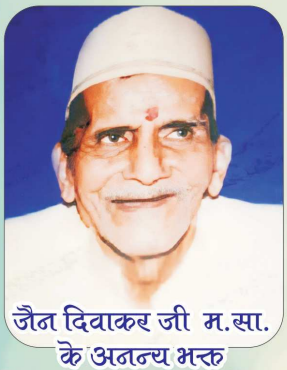

जैन दिवाकर जी म.सा.
के अनन्य भक्त
श्री बापूलाल जी बोथरा

# परमज्य गुरूदेव के जन्म जयंती दिवस एवं दीक्षा जयंती दिवस पर

# हार्दिक नमन, वंदन एवं अभिनंदन

महेन्द्र बोथरा
मो. 9826498266

वंदनकर्ता :
बोथरा परिवार,
रतलाम (म.प्र.)

सौरभ बोथरा
मो. 9827006500

॥ जैन दिवाकराय नमः॥

## गुरूदेव जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं उपाध्याय कस्तूरचंदजी म.सा. की जयंती पर शत् शत् नमन

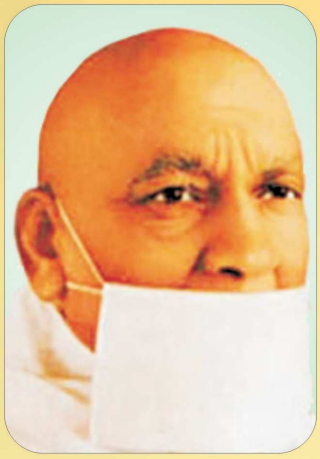
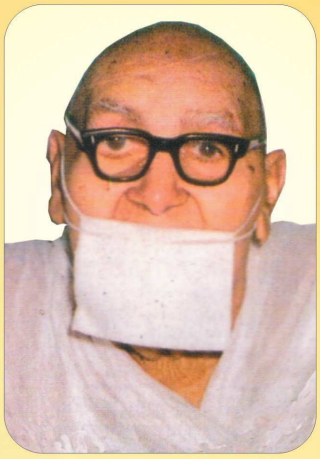

# 145 वीं जैन दिवाकर जन्म जयंती एवं 117 वीं कस्तुर गुरू दीक्षा जयंती

## पर समस्त गुरूभक्तों का

# हार्दिक वंदन, नमन एवं अभिनंदन

**शांतिलाल मारू**
राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति, निम्बाहेड़ा (राज.)
बी- 5 आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा
जिला चित्तौड़गढ़ मो.9414148875

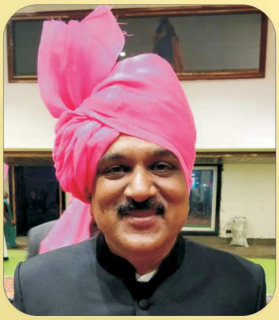

**विरेन्द्रसिंह चौधरी**
महामंत्री : अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति,भीलवाड़ा (राज.)
ए 138 शास्त्री कॉलोनी, भीलवाड़ा
मो. 9829046795

**सिद्धराज संघवी**
रा.सं.मंत्री : अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति,भीलवाड़ा (राज.)
एनक आईवियर नवाबगंज निम्बाहेड़ा
जिला चित्तौड़गढ़ मो. 9829886701

**जयंतीलाल डांगी**
रा. कोषाध्यक्षः अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति, रतलाम (म.प्र.)
7 पोरवाड़ों का वास, रतलाम
मो. 9009106715

**एवं समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण अ.भा. जैन दिवाकर संगठन समिति**